मार्च–2015 ◆ वर्ष 3 ◆ अंक 10 ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मार्च–२०१५

जैसे घड़ा कुम्हार बनाता,
ईश्वर यह संसार रचाता।
सूरज–चाँद उसी की रचना,
चित्र–विचित्र आकार बनाता।
अपने आप नहीं कुछ बनता,
सत्यार्थ प्रकाश यही सिखाता।।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर–313001 (राज.)

₹ १०

मसालों का अम्बार, एम.डी.एच. परिवार।
MDH
मसाले
असली मसाले
सच - सच
Pav Bhaji masala
Sambhar masala
Garam masala
DEGGI MIRCH
Chunky Chat masala
Chana masala
Kitchen King
Peacock Kasoori Methi
महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
ESTD. 1919
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली–110015 Website : www.mdhspices.com

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग

नवनीत आर्य

व्यवस्थापक

सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

कहाँ मुँह छुपाओगे ?

'मूल'- सर्जना की शाश्वत परम्परा- अमृता-कर्षण दम्पती

सहयोग ◆ भारत	विदेश
संरक्षक - ११००० रु.	$ 1000
आजीवन - १००० रु.	$ 250
पंचवर्षीय - ४०० रु.	$ 100
वार्षिक - १०० रु.	$ 25
एक प्रति - १० रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट **श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास** के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर
खाता संख्या : ३१०१०२०१००४१५१८
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३११५
चैत्र कृष्ण द्वितीया
विक्रम संवत्
२०७१
दयानन्दाब्द
१९०

March- 2015

०४	वेद सुधा
०६	सत्यार्थ प्रकाश की भाषा व शैली
१०	किस रज से बनते कर्मवीर
११	जीवात्मा और ईश्वर का सख्यभाव
१३	स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती
१४	मूल्यांकन व नियोजन का अवसर
१६	कथा सरित
१७	श्रीराम-भरत का भ्रातृ प्रेम
१९	वेदों में इन्द्र-वृत्र युद्ध
२१	सत्यार्थप्रकाश पहेली-१४
२२	स्वामी दयानन्द सर्वप्रथम हैं।
२४	गलत कार्य को रोकें भी
२६	वानप्रस्थाश्रम के कर्त्तव्य
३०	सत्यार्थ प्रकाश क्यों पढ़ें?

समाचार २५
हलचल २६

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर २ व ३ (भीतरी आवरण) रंगीन
३५०० रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	२००० रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	१००० रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	७५० रु.

स्वामी श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - ३ अंक - १०

द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.)
११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर **मुद्रण**

प्रकाशक
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) ३१३००१
(०२९४) २४१७६९४, ०९३१४५३५३७९, ०९८२९०९३११०
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

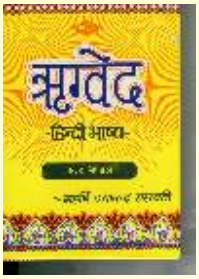

वेद सुधा

अर्चा शक्राय शाकिने शचीवते शृण्वन्तमिन्द्रं महयन्नभि ष्टुहि।
यो धृष्णुना शवसा रोदसी उभे वृषा वृषत्वा वृषभो न्यृञ्जते॥ - ऋग्वेद १/५४/२

प्रस्तुत वेद मंत्र में प्रभुस्तवन कर, शक्ति एवं ज्ञान प्राप्त करने की प्रेरणा की गई है। प्रभु शक्ति एवं सम्पूर्ण ज्ञान के आधार हैं। प्रभुभक्त उसी प्रकार शक्ति सम्पन्न हो जाता है जिस प्रकार अग्नि के सम्पर्क से लोह शलाका। प्रभुस्तवन ही तो जीवन लक्ष्य का स्मरण कराता है। प्रभु हमारे पृथिवी रूप शरीर को सुदृढ़ करते हैं तो द्युलोक रूप मस्तिष्क को भी ज्ञान के प्रकाश से आलोकित कर देते हैं। शरीर शक्ति से शोभित होता है तो मस्तिष्क ज्ञान का घर बन जाता है। इस शक्ति और ज्ञान के मेल से हमारे सब कष्ट दूर हो जाते हैं। हम प्रातः सायं प्रभुस्तवन कर शक्तिसम्पन्न बन जीवन लक्ष्य को प्राप्त करें।

आत्म विश्वास सफलता का प्रखर रहस्य है ।
(Self trust is the main secret of success)

तं गूर्तयो नेमन्निषः परीणसः समुद्रं न संचरणे सनिष्यवः।
पतिं दक्षस्य विदथस्य नू सहो गिरिं न वेना अधि रोह तेजसा॥ -ऋग्वेद १/५६/२

प्रस्तुत वेद मंत्र में परमात्मा को प्राप्त करने के लिए तेजस्वी बनने की प्रेरणा की गई है। परमात्मा को वही प्राप्त करते हैं जो उद्यमी, नम्र और चारों ओर कार्यों में व्यापक गति वाले हैं। प्रभुप्राप्ति पर्वतारोहण की भांति कठिन है। इसके लिए शक्ति सम्पादन आवश्यक है। निर्बल व्यक्ति प्रभु को नहीं प्राप्त कर सकते। जैसे व्यापार आदि से धनों को प्राप्त करने वाले देश देशान्तर उद्योग करते हैं वैसे ही सम्पूर्ण वृद्धियों, शक्तियों, ज्ञानों, बलों के पुञ्ज प्रभु को तेजस्विता से प्राप्त किया जा सकता है। हम नम्रतायुक्त, स्तुति, व्यापक कर्मों वाले बन कर तेजस्विता को सिद्ध करते हुए प्रभु को प्राप्त करें।

आलस्य दरिद्रता की कुंजी है ।
(Idleness is the key of beggary.)

त्वं तमिन्द्र पर्वतं न भोजसे महो नृम्णस्य धर्मणामिरज्यसि।
प्र वीर्येण देवताति चेकिते विश्वस्मा उग्रः कर्मणे पुरोहितः॥ -ऋग्वेद १/५५/३

प्रस्तुत वेद मंत्र में अविद्या को दूर कर पुरोहित बनने की प्रेरणा की गई है। अविद्या के प्रबल होने पर मनुष्य अनुचित मार्ग से धन अर्जित करता है। तोड़, फोड़ की क्रियाओं में रुचि लेता है। अविद्या के दूर होते ही वह सत्य नीति से कमाना और निर्माण कार्यों में सहयोग करने लगता है। वह दिव्यगुणसम्पन्न बन महनीय धन एवं ऐश्वर्य प्राप्त कर सब कार्यों के लिए तेजस्वी होता है, पुरोहित बन अन्य व्यक्तियों को भी सद् कार्यों में लगाता है। हम जीवन में अविद्या को न पनपने दें।
महनीय धन-धर्म के स्वामी बन तेजस्विता के साथ श्रेष्ठ कर्म कर अन्यों के लिए आदर्श प्रस्तुत करें।

आश्चर्य ज्ञान का मूल है ।
(Wonder is the seed of knowledge.)

अपामतिष्ठद्धरुणह्वरं तमोऽन्तर्वृत्रस्य जठरेषु पर्वतः।
अभीमिन्द्रो नद्यो वव्रिणा हिता विश्वा अनुष्ठाः प्रवणेषु जिघ्नते॥ -ऋग्वेद १/५४/१०

प्रस्तुत वेद मंत्र में दान की वृत्ति से अज्ञान का तम दूर कर दैवीय सम्पत्ति प्राप्त करने की प्रेरणा की गई है। मन में दान की वृत्ति बनने से लोभ नष्ट हो जाता है जिससे प्रभुदर्शन से वंचित करने वाला अज्ञान दूर हो जाता है। अज्ञान का पर्वत काम के उदरों में रहता है। काम गया तो अज्ञान कहाँ? अविद्या नष्ट होते ही प्रभु का दर्शन हो जाता है। प्रभु का स्तवन करने वाले तेजस्वी होते हैं। वे सब स्तोता शास्त्रानुकूल मार्ग में मर्यादानुकूल नम्रतावाले मार्ग से गति करते हैं। इनके जीवन में अभिमान नहीं होता। यही तो दैवीय सम्पत्ति की पराकाष्ठा है।

हम दानवृत्ति से अज्ञान दूर कर प्रभु के प्रिय बनें, शास्त्रानुकूल अनुष्ठान करने वाले नम्रता के मार्ग से आगे बढ़ें।

प्रारम्भ अच्छा तो आधा काम पूरा ।
(Well began is half done.)

तुभ्येदेते बहुला अद्रिदुग्धाश्चमूषदश्चमसा इन्द्रपानाः।
व्यश्नुहि तर्पया काममेषामथा मनो वसुदेयाय कृष्व॥ -ऋग्वेद १/५४/६

प्रस्तुत वेद मंत्र में मन को दानवृत्ति से युक्त करने की प्ररेणा की गई है जिससे सोमरक्षण की क्षमता प्राप्त हो सके। दान की वृत्ति वासनाओं को काटकर जीवन को शुद्ध बनाती है। सोम कणों के रक्षण से शरीर निर्मल और बुद्धि तीव्र होती है। जितेन्द्रिय मनुष्य से ही इनका रक्षण होता है और उससे रक्षित होकर ही ये उसका रक्षण करने वाले होते हैं। सोमकणों के शरीर में व्याप्त होने से इन्द्रियों की शक्ति का रक्षण होता है।

जीवन के परम कल्याण के लिए हम सोमकणों का विशिष्ट रूप से शरीर में व्यापन करने वाले बनें।

आलस्य जीवित मनुष्य को दफ़ना देता है ।
(Idleness is the burial of a living man.)

अर्चा दिवे बृहते शूष्यं वचः स्वक्षत्रं यस्य धृषतो धृषन्मनः।
बृहच्छ्रवा असुरो बर्हणा कृतः पुरो हरिभ्यां वृषभो रथो हि षः॥ -ऋग्वदे १/५४/३

प्रस्तुत वेद मंत्र में प्रभु को अपना रथ बनाने की प्रेरणा की गई है। प्रभु की सच्ची उपासना वही है जिससे मन आत्मबल सम्पन्न बनकर वासनाओं को कुचल दे। यदि उपासक बनकर भी व्यक्ति वासनाओं के वशीभूत रहे तो उपासना का क्या लाभ? प्रभु का भक्त प्रभु को अपना जीवन आदर्श बना उनके गुणों को अपने आचरण में लाने का प्रयत्न करता है। प्रभु ज्ञानेन्द्रियाँ देकर ज्ञान प्राप्ति के योग्य बनाते हैं और कर्मेन्द्रियों द्वारा शक्ति सम्पन्न करते हैं। वह रथ बनकर जीवन यात्रा में तीव्रता से मनुष्य को सुमार्ग पर ले जाते हैं।

हम प्रभुस्तवन से ज्ञान व शक्ति सम्पन्न बन, प्रभु को अपना जीवन रथ बना, जीवन यात्रा में निरन्तर आगे बढ़ें।

अन्तःकरण की वाणी ईश्वर की वाणी है ।
(The voice of conscience is the voice of God.)

प्रस्तुति - महेश चन्द्र गर्ग, सासनी

आत्म निवेदन

कहाँ मुँह छुपाओगे ?

अरविन्द केजरीवाल की आप पार्टी ने दिल्ली चुनाव में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त कर ली है। इस प्रकार की विजय का अनुमान तो स्वयं आप पार्टी ने नहीं लगाया होगा। इस चुनाव के परिणामों का विश्लेषण सत्ताधारिओं को एक सन्देश दे रहा है जिसे वे समय रहते समझ लें तो राष्ट्र के लिए शुभ होगा। जो भी हो यह भारतीय लोकतंत्र के निष्पक्ष संवैधानिक आयुधों का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है। परन्तु हम यह आलेख इस समाचार के राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में नहीं लिख रहे ।

दिल्ली के चुनावों के पूर्वानुमानों की बात करें तो तीन प्रकार की वैध-अवैध एजेंसियाँ इस कार्य में तत्पर थीं। एक जिन्हें सैफोलोजिस्ट कहा जाता है, दूसरी सट्टाबाजार तथा तीसरे तथाकथित दैवीय विद्या में निष्णात् ज्योतिषीगण। जहाँ तक ओपीनियन तथा एक्जिट पोल करने वाले सैफोलोजिस्टों का सवाल है वे प्रायः सही भविष्यवाणी करने में सफल रहे यद्यपि आप पार्टी की इतनी बड़ी जीत का दावा वे भी नहीं कर पाए। पर सभी का यह निष्कर्ष अवश्य था कि केजरीवाल को मुख्यमंत्री बनने से कोई नहीं रोक सकता और यह हुआ भी। सैफोलोजिस्टों के परिणाम यदि गलत भी होते तो आपत्तिजनक नहीं था क्योंकि वे अपने को दैवीय विद्या का वाहक नहीं कहते। यह अनुसंधान की एक मानवीय प्रक्रिया है जिसमें त्रुटि संभव है ऐसा मानने से वे परहेज नहीं करते। जहाँ तक सट्टा बाजार का प्रश्न है उसके काम करने के तरीके गोपनीय होते हैं (अवैध होने से), अतः उन पर टिप्पणी सम्भव नहीं।

हम यहाँ बात करेंगे उन भविष्यवक्ताओं की जो ग्रहों की अटलगति व स्थिति के हवाले से कहीं भी, कभी भी, किसी के भी बारे में अचूक भविष्यवाणी करने का दावा करते हैं और बार-बार चूक करते हैं। पर इनकी चूक की कहीं चर्चा नहीं होती, आलोचना नहीं होती और ज्यादातर फलित ज्योतिष में विश्वास रखने वालों को यह पता ही नहीं होता कि भविष्य के गर्भ में झाँकने का दावा करने वाले इन महारथियों के दावे हवा में इस प्रकार उड़ गए कि अगर कोई तनिक-सी भी नैतिकता रखता हो तो इस धंधे को ही छोड़ दे। इस आलेख के माध्यम से एक बार फिर हम यह विनम्र प्रयास कर रहे हैं कि अपना यह सन्देश उन लोगों तक पहुँचा सकें जो कि फलित ज्योतिष को सटीक विज्ञान मानते हुए सारी जिन्दगी इन ज्योतिषियों के चक्कर में गुजार देते हैं। अगर हम फलित ज्योतिषियों के दावों की परीक्षा करना चाहें तो हमारे विचार में जो इनकी तकनीकी शब्दावली नहीं भी जानते वे भी इतना तो आकलन कर ही सकते हैं कि इन लोगों के द्वारा की जा रही भविष्यवाणियाँ किस प्रतिशत में सही निकल रहीं हैं। हमने पिछले वर्षों में यह हमेशा अनुभव किया है, बार-बार अनुभव किया कि जब भी ज्योतिषी भविष्यवाणियाँ करते हैं तो समय आने पर और उसके बाद उन भविष्यवाणियों का क्या परिणाम रहा इस बात पर या तो हम ध्यान देने का प्रयास नहीं करते अथवा ये भविष्यवाणियाँ गलत भी निकलीं थीं यह शीघ्र भूल जाते हैं और इसी चक्कर में पड़े रहते हैं।

हम यह भी मानते हैं कि इस आलेख को पढ़ने वाले आगे से फलित ज्योतिष पर विश्वास करना छोड़ देंगे ऐसा भी नहीं है परन्तु हमारा मानना है कि सत्य के प्रति समाज में जागरूकता उत्पन्न करने के प्रयास करते रहना 'सत्यार्थ-सौरभ' का उद्देश्य है। हम तो यह भी कहेंगे कि इस आलेख में विभिन्न वेवसाइटों पर उपलब्ध विभिन्न ज्योतिषियों की दिल्ली चुनाव के बाबत् भविष्यवाणियाँ जो हम दे रहे हैं वे पूर्णतः गलत साबित हो चुकी हैं जैसा कि लोकसभा चुनाव २०१४ के समय में हुआ था अतः ज्योतिषी भाइयों को इस आलेख का बुरा न मान स्वीकार करना चाहिए कि दो-दो महत्वपूर्ण अवसर पर पूर्णतः गलत निकलना आखिर क्या सन्देश दे रहा हैं? कम से कम फलित ज्योतिष को विज्ञान मानने वाले को तो यह कहना त्याग ही देना चाहिए। कुछेक बार भविष्यवाणी सही भी निकल आती है तो वह तुक्का ही है, इससे अधिक कुछ नहीं।

प्रिय पाठकगण! आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि घटनाओं की इस प्रकार व्याख्या करने वाले कि अमुक व्यक्ति के साथ ये तो होना ही था क्योंकि ग्रह-नक्षत्र यही कह रहे थे, आखिर फाइनल में फेल कैसे हो गए? पाठकगण! अब इनकी त्रिकालदर्शिता की बानगी देखें-

१. एक ज्योतिषी लिखते हैं कि लग्न का स्वामी शनि दशम घर में वृश्चिक राशि (फीमेल) में है इसलिए भाजपा की मुख्यमंत्री पद की उम्मीदवार कोई महिला ही होगी और वह मुख्यमंत्री बनेगी। वे आगे लिखते हैं-

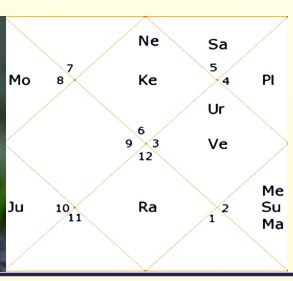

I can write here with bold letters that the future Chief Minister of Delhi will be Kiran Bedi . इनके दावे की क्या दशा हुई है यह आप सभी जानते हैं। किरण जी स्वयं ही हार गईं। यहाँ ये महाशय काफी लम्बे तथा तकनीकी विश्लेषण के पश्चात् यह भी घोषित करते हैं कि इन चुनावों में कोई भी पार्टी बहुमत

प्राप्त नहीं करेगी। राष्ट्रपति-शासन की संभावना भी हो सकती है।

२. श्री अशोक घई ने चेन्नई के एक प्रसिद्ध ज्योतिषी का उल्लेख करते हुए, उनकी अनेक सफल भविष्यवाणियों का जिक्र करते हुए अंत में आप पार्टी के सम्बन्ध में उनकी भविष्यवाणी के बारे लिखा है कि-

After December 2014 the party (आप) would lose it's sheen. अर्थात् दिसंबर २०१४ के बाद आप पार्टी अपनी चमक खो देगी। अब यह चमक खोई या नहीं यह आपके समक्ष है। मलेशिया के खोये हुए जहाज के बारे में सही-सही जानकारी तथाकथित रूप से देने वाले यह सज्जन जो अपनी सटीक भविष्यवाणी का श्रेय श्री हनुमान जी की सिद्धि को देते हैं अब क्या स्पष्टीकरण देंगे?

३. एक ज्योतिषी जी ने २२ नवम्बर २०१४ को लिखी एक पोस्ट में आप पार्टी की जन्म कुण्डली एवं ग्रह-दशाओं का विस्तृत विश्लेषण करते हुए उन दशाओं का विवरण दिया है जिन्होंने अरविन्द केजरीवाल को दिल्ली का मुख्यमंत्री बनाया (२०१३ में)।

इन्होंने यह भी बताया कि चन्द्रमा सातवें घर का मालिक है अतएव पार्टी की पब्लिक इमेज खराब हो जायेगी। पार्टी की कुण्डली में शनि और शुक्र का युद्ध चल रहा है और शुक्र विजेता है इस कारण से पार्टी अध्यक्ष अपने कार्यकर्त्ताओं की बात नही सुनेगा। यह भी कहा गया है कि अरविन्द केजरीवाल की अनिश्चयात्मक मनोदशा के लिए चन्द्रमा जिम्मेदार है। आगे इन्होंने निष्कर्ष दिया है-

Because of these negative parameters Aam Admi Party **will be struggling to come in power** also they were not be able to achieve much in the general elections 2015. Dasha at the time of Delhi assembly elections will be Venus & Moon & **Rahu may not be able to give good results in the favour of Aam Admi Party.**

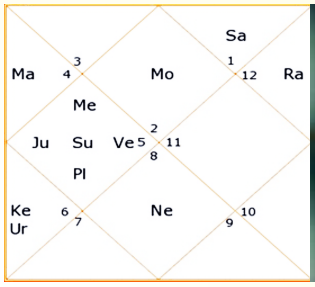

४. एक अन्य पोस्ट में किरण वेदी तथा केजरीवाल की कुंडलियों और ग्रह-दशा का विस्तृत विश्लेषण कर निष्कर्ष निकाला है कि वर्तमान समय अरविन्द केजरीवाल के बहुत ज्यादा पक्ष में नहीं है अतः उनके दिल्ली के अगले मुख्यमंत्री अथवा किसी भी प्रसिद्ध पद को पाना संदेहास्पद है क्योंकि दशवें घर का स्वामी शनि कमजोर है।

५. १६ जनवरी की एक अन्य पोस्ट में 'अरविन्द केजरीवाल का क्या होगा' यह उनकी कुंडली के आधार पर विश्लेषित करके बताया गया है- कहा गया कि इनकी कुण्डली में बुध आदित्य योग तथा गज केसरी योग बन रहे हैं जो इनके अनुकूल हैं। आठवें और ग्यारहवें घर के स्वामी जुपीटर की महादशा चल रही है जो इनके जीवन में अचानक लाभ अथवा हानि का कारक है। इसी कारण वे केवल ४६ दिन दिल्ली के मुख्यमंत्री रह सके। अतः वे निष्कर्ष निकालते हैं-

Arvind Kejriwal will remain political activist, but present period is not very encouraging and favorable for him. It is doubtful if he would become the new Chief Minister of Delhi or would get any position of fame easily. His Aam Aadmi Party will be struggling to come to power but it may not be able to gain power at least for now.

६. एक अन्य ज्योतिषी ने किरण बेदी तथा अरविन्द केजरीवाल की कुंडलियों का मिलान करते हुए लिखा है कि-

किरण बेदी के मुख्यमंत्री बनने के प्रबल आसार हैं। वर्तमान में बेदी सन-मरकरी-जुपीटर की दशा में ३१ जनवरी २०१५ तक हैं तत्पश्चात् २१ मार्च २०१५ तक सन-मरकरी-सेटर्न होगी। बेदी वर्तमान दिल्ली चुनाव में इसी दशा में रहेंगी। इन व अन्य ज्योतिषीय स्थितियों के कारण यह किरण बेदी के लिए सर्वाधिक लाभ का समय है।

चुनाव के समय में केजरीवाल की दशा जुपीटर-वीनस-केतु है अन्य अनेक ज्योतिषीय संकेतों को देखते हुए यह स्पष्ट है कि केजरीवाल को जन-समर्थन तो है पर संकेत इतने पक्ष में नहीं हैं कि वे मुख्यमंत्री बन सकें। किरण बेदी का चार्ट यह बता रहा है कि एक **IPS** ऑफीसर दिल्ली की शासिका बनने जा रही है।

७. एक अन्य निष्कर्ष देखें- Thus the prediction goes like this: BJP will have a land slide/Gate crashing victory in coming Delhi election. They will easily cross 2/3rd majority. **Expect them to even go beyond 55 seats.** There will be a total & complete rout of all other parties.

८. एक अन्य विश्लेषण में निष्कर्ष निकाला है-

Using Astrology Methods predict results of Assembly Elections in Delhi on 7th February 2015, Counting of votes on 10th Feb. BJP is the expected party to form government.

इनका कहना है कि चुनाव के दिन अर्थात् ७ फरवरी को ध्यान में रखें तो भाजपा को ४० सीटें और यदि चुनाव-परिणाम घोषित होने की

तिथि ध्यान में रखें तो भाजपा को ५० सीटें मिलती हैं, जो भी हो यह निश्चित है कि दिल्ली में भाजपा की सरकार बन रही है।

९. एक अत्यंत प्रसिद्ध बेवसाईट पर सूर्य की महादशा और जुपीटर की अन्तर्दशा एवं अन्य ग्रहों की स्थिति के आधार पर भाजपा को ४० सीटों की भविष्यवाणी की गयी जबकि आम आदमी पार्टी को २५ और कांगेस को ५ सीटें दी गयीं हैं।

१०. फलादेशों की एक विधा न्यूमरोलॉजी कही जाती है। दिल्ली चुनावों में इसका भी प्रयोग हुआ है। इनका भी लम्बी गणना के बाद निकाला निष्कर्ष आपके समक्ष प्रस्तुत है- यहाँ प्रश्न उठाया है कि क्या सन् २०१५ अरविन्द केजरीवाल के लिए लाभदायक है- उत्तर नकारात्मक है।

११. २८ जनवरी २००५ की एक पोस्ट में स्पष्ट कहा है-

सर्वे में भले ही आप पार्टी के अरविन्द केजरीवाल भाजपा के मुख्यमंत्री पद की उम्मीदवार किरण बेदी से आगे चल रहे हों लेकिन सीएम किरण बेदी ही बनेंगी। यह कहना है ज्योतिषियों का। ज्योतिषियों के अनुसार किरण बेदी का जन्म ९ जून १९४९ को पंजाब के अमृतसर में दोपहर के २ बज कर १० मिनिट पर हुआ था। उनकी जन्मराशि कन्या है। जबकि उस समय हस्त नक्षत्र चल रहा था। उनकी जन्मकुंडली में शुक्र और बुध मिल कर प्रचण्ड राजयोग बना रहे हैं जिसके चलते उन्हें भारत की पहली महिला आईपीएस बनने का सौभाग्य मिला। इसके अतिरिक्त गुरु, चन्द्रमा और मंगल मिलकर नीचभंग योग बना रहे हैं जिससे उन्हें विवादों के बावजूद भी लगातार सफलता मिलती रही है।

वर्तमान में किरण बेदी की कुंडली में सूर्य की महादशा में बुध की अन्तर्दशा चल रही है जबकि शनि की प्रत्यन्तर दशा ५ फरवरी २०१५ को शुरू हो जाएगी। दिल्ली में चुनाव के लिए मतदान ७ फरवरी को होगा तथा मतगणना १० फरवरी २०१५ को की जाएगी। इस दौरान उनकी चलित कुंडली में राहु बुध से युति करेगा जो कि प्रबल राजयोग बनाएगा। इस समय उनकी कुंडली में सूर्य और मंगल का भी राशि परिवर्तन होगा जो उनके लिए स्थितियों को अनुकूल बना देगा। ऐसे में यही संकेत मिलते हैं कि किरण बेदी न केवल इस चुनाव में जीतेंगी वरन् दिल्ली की मुख्यमंत्री भी बनेंगी और एक कुशल प्रशासक के रूप में अपनी छाप छोडेंगी।

१२. एक स्थान पर एक और विचित्र बात कही है कि केजरीवाल ४६ साल के हैं और ४ तथा ६ का योग १० और इससे १ बनता है जो सफलता का सूचक है। इसके अनुसार मानें तो क्या हर ४६ वर्ष का व्यक्ति दिल्ली का मुख्यमंत्री बन जाएगा?

यहाँ यह भी लिखना समीचीन होगा कि अंतर्जाल पर पर्याप्त जाँच पड़ताल करने के पश्चात् केवल एक भविष्यवाणी ऐसी मिली जिसमें आप की भारी विजय की बात कही गयी है। वैसे यह पोस्ट ३० जनवरी की है जब तक प्रायः सभी को अंदाजा हो गया था कि 'आप' जीत सकती है।

उपरोक्त सभी भविष्यवाणियाँ उद्धृत करते समय हमने किसी ज्योतिषी का नामोल्लेख नहीं किया है क्योंकि किसी को बदनाम करना हमारा उद्देश्य नहीं है। जो पाठक ज्यादा जानने की रुचि रखते हैं वे स्वयं गूगल पर जाँच पड़ताल कर सकते हैं। इस विवरण से फलित ज्योतिष की सत्यता का नग्न सत्य सामने आ गया है, ठीक ऐसा ही लोकसभा चुनावों के पश्चात् हुआ था, फिर भी न इन लोगों ने अपना यह जनता को मूर्ख बनाने का व्यवसाय छोड़ा और न जनता और नेताओं ने इनका आश्रय लेना।

क्या अबकी बार लोग इस असत्य तथाकथित विद्या का मोह छोड़ेंगे?

प्रभु ने 'विवेक' नामक विशेष वरदान केवल अपने अमृतपुत्र मानव को दिया है। हमें चाहिए उसका अपमान न करें और उसका प्रयोग करें। दिल्ली में तो आप की झाड़ू चल गयी, आप विवेक की झाड़ू का प्रयोग कर मानव-मन की गहराइयों तक प्रविष्ट फलित ज्योतिष तथा ऐसे ही कचरे पर झाड़ू लगा दें।

- अशोक आर्य
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०९००१३३९८३६

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹ ११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री आर.डी. गुप्त, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष,श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभाआर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ.वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, सोलन, माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली

सत्यार्थ प्रकाश की भाषा व शैली

डॉ. रामप्रकाश

हिन्दी ने वर्तमान स्वरूप तो धीरे-धीरे ग्रहण किया है परन्तु उस समय (सत्यार्थ प्रकाश लेखन समय) के अनुसार इस ग्रन्थ की भाषा शुद्ध बनी है। ऋषि दयानन्द सरल सुबोध संस्कृत मिश्रित हिन्दी के पक्षधर हैं। जहाँ सत्यार्थ प्रकाश का समूचा सूचीपत्र संस्कृत में है, वहाँ प्रमाणों के पते हिन्दी में लिखे हैं। वे उर्दू, अंग्रेजी व अन्य भाषाओं एवं बोलियों के शब्दों के प्रयोग के विरोधी नहीं हैं। इसीलिए उनकी भाषा पर संस्कृत तथा प्रादेशिक बोलियों का प्रभाव स्पष्ट है। सत्यार्थप्रकाश में जहाँ पुनरुक्त, निरुद्यम, अनध्याय, परिच्छिन्न, अव्याहतगति, ऐक्यमत, पुरश्चरण, संयोगज, प्रागभावात् आदि तत्सम शब्दों का प्रयोग है, वहाँ प्रसंग सापेक्ष अरबी-फारसी के बहिश्त, क़ियामत, पैगम्बर, रसूल, दोज़ख़, मंजिल, सिपारा, आयत आदि, उर्दू के फ़ज़ल, फ़रिश्ता, मज़हब आदि और अंग्रेजी के फ़िलासफ़र, फ़िलासफ़ी, पोलिटिक्स, प्रिन्सिपल जैसे शब्द भी यत्र तत्र मिलते हैं। उन्होंने वकील, तोप, बन्दूक जैसे विदेशी शब्दों के लिए प्राड्विवाक, शतघ्नी, भुशुंडी जैसे प्राचीन संस्कृत शब्दों का प्रचलन करना चाहा है। इसी प्रकार 'मेरा' के लिए 'मुझ', भर्त्सना एवं दण्ड देने के अर्थ में 'शिक्षा', सारहीन के लिए 'पोकल', चूहे के लिए 'ऊंदर' तथा पोंपाबाई का न्याय आदि का प्रयोग गुजराती प्रभाव है। 'ढीठ' के लिए 'धीठ', जीवन की अवधि के लिए 'जीवने', 'बिठलाकर' के लिए 'बिठालकर' मारवाड़ी और 'पुजारी' के लिए 'भोपे' राजस्थानी प्रयोग है। ऋषि ने बद्दल (बादल), सहत (शहद), मट्टी (मिट्टी), मच्छी (मछली), धूड. (धूल), बिजुली (बिजली), तोटा, जिमाना आदि राजस्थानी पंजाबी-हरियाणवी मिश्रित शब्दों का भी प्रयोग किया है। उनकी भाषा पर ब्रज क्षेत्र का प्रभाव होना स्वाभाविक है जो चाहै, रहै, होवै, भया, करनेहारा, देखनेहारा जैसे शब्दों के प्रयोग से स्पष्ट है। उन्होंने तुम्हें को तुहें, तुम्हारा को तुह्मारा, हटने को हठने, पसन्द को प्रसन्न और आवश्यक के अर्थ में 'अवश्य' लिखा है। सूधा (सीधा), क्रोड़ (करोड़) कै प्रकार (कितने प्रकार), नौकर-चाकर आदि ग्रामीण तथा भीड़ भड़क्का, ऊँटपटांग, हल्लागुल्ला, लड़ाई बखेड़ा, तोड़ताड़कर, गपोड़ा आदि लोक प्रचलित शब्दों का भी पर्याप्त प्रयोग है। ऋषिवर ने 'गपोड़ाध्याय', 'पेटार्थी' आदि कुछ नए शब्द घड़े हैं, तथा पोप, पुजारि जैसे शब्दों का नए अर्थों में प्रयोग किया है। प्रार्थना, तीर्थ, स्तुति आदि पुराने शब्दों को पूर्णतया नयी और सार्थक परिभाषाएँ दी हैं। कुछ विदेशी नामों को हिन्दी का समरूप दिया है जैसे मैक्समूलर का मोक्षमूलर, जूदा का यहूदाह, पेटर का पितर लिखा है।

हिन्दी गद्य में ऋषि दयानन्द की अपनी विशिष्ट शैली है। आर्ष विद्या के मर्मज्ञ ऋषि ने उच्चारण के अनुसार लिखना तथा संस्कृत भाषा के तुल्य शब्दों का हिन्दी में प्रयोग करना उचित समझा है। इसीलिए करता, धरता, मानता, सकता.....को कर्त्ता, धर्त्ता, मान्ता, सक्ता.... और दस, भुस, गहरा, चौबीसवें, पड़ौसी.....को दश, बुस, गहिरा, चौवीशवें, परौसी.... लिखा है। तेरहवें तथा चौदहवें समुल्लास में क्रमशः शैतान व शयतान लिखा है। यह क्रमशः अंग्रेजी व उर्दू भाषा के उच्चारण के अनुरूप है। महत्व को महत्त्व (महत्+त्व) लिखा है। जो सार्थक है। धूर्त्त, धर्म्म, आर्य्य इत्यादि पदों में त्, म्, य् पदों को द्वित्व करके लिखा है। मतविषयक, उनतुल्य, धूर्तकथित आदि पद समस्त रूप में प्रयुक्त किए हैं। कहीं-कहीं समस्त पदों का प्रयोग सुविधाजनक न होने से छोड़ भी दिया है। सन्धि करते समय भी सुविधा का ध्यान रखा गया है। इसीलिए 'अति उद्युक्त' को सन्धि रहित ही रखा है। सत्यार्थप्रकाश के इस संस्करण में प्रायः संस्कृत भाषा के लिंग का प्रयोग किया गया है। वायु, सन्तान, आहुति, अग्नि, आत्मा का हिन्दी में स्त्रीलिंग है, ऋषि ने पुलिंग प्रयोग किया है। जैसे जहाँ का वायु, स्पर्श गुणवाला वायु, वायु सुखकारक होगा, सन्तान बड़ा भाग्यवान, आहुति देना,.....। 'आयु' शब्द संस्कृत में नपुंसक है, हिन्दी में स्त्रीलिंग। सत्यार्थ प्रकाश में 'आयु' दोनों लिंगों में प्रयुक्त हुआ है। इसी प्रकार ऋषि दयानन्द संस्कृत पद 'विना' लिखते हैं न कि इसका अपभ्रंश रूप 'बिना'। स्वामी जी 'अथवा' का विकल्प 'वा' प्रयुक्त करते हैं, न कि 'व' और 'या'।

ऋषि दयानन्द अपने जीवन के अन्तिम दशक में अनेक प्रदेशों में धर्म प्रचारार्थ भ्रमण करते रहे। उन्हीं दिनों उनकी हिन्दी का विकास हो रहा था। अतः उनकी भाषा में कई प्रदेशों की भाषाओं व बोलियों के शब्द प्रतिष्ठित हैं। ऐसी भाषा, जिसका आधार तो संस्कृत हो पर उसमें विभिन्न भाषाओं के शब्द हों, वो ही इस देश को जोड़ने वाली राष्ट्रभाषा बनती है।

प्रश्नोत्तरी की शैली में लिखे इस ग्रन्थ में शास्त्रीय पद्धति से समीक्षा की गई है। इसमें तर्क, दृष्टान्त तथा प्रमाण बाहुल्यता और हास्य-व्यंग, कहानी विधा का उपयोग, सूत्रात्मकता, करुणा, ओज, स्वदेश प्रेम तथा भक्ति रस की परिपूर्णता है। यह ग्रन्थ इतना सरल है कि मात्र देवनागरी लिपि जानने वाला व्यक्ति भी इसका भाव समझ सकता है। परन्तु गहन इतना है कि पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी जैसी अद्भुत प्रतिभा ने इसको जितनी बार पढ़ा, हर बार कोई नया विचार-रत्न मिला।

"ऋषि की भाषा का अपना सौन्दर्य है। अतः सत्यार्थ प्रकाश के एक-एक शब्द को पूर्ववत् बनाए रखना भाषा-लेखन के इतिहास को सुरक्षित रखना है।"

साभार- सत्यार्थ विमर्श

किस रज से बनते कर्मवीर

२७ मार्च २०१५

कर्मवीर वे हैं, जो अपना भाग्य स्वयं बनाते हैं। जो दिन रात परिश्रम करते हैं ओर चुनौतियों का सामना करते हुए एक दिन मंजिल प्राप्त कर लेते हैं।

एम.डी.एच. मसाला कम्पनी के संस्थापक महाशय धर्मपाल गुलाटी का नाम आज विश्व में चर्चित है। आज उनका कारोबार ६०० करोड़ रुपये से भी अधिक है। १९४७ ई. में देश का विभाजन हुआ। तब वह केवल १५०० रु. लेकर पाकिस्तान से भारत आए। लेकिन अपनी मेहनत से उन्होंने सब चुनौतियों का सामना किया। यहाँ तक कि दिल्ली के कुतुब रोड पर ताँगा चलाया। स्वप्न में भी कभी यह ख्याल नहीं आया कि एक दिन वह विश्व में एम.डी.एच. मसालों के कारण लोकप्रिय होंगे। आज उनकी कम्पनी के मसालों का अमेरिका, कनाडा, ब्रिटेन, जापान आदि अनेक देशों में निर्यात होता है।

महाशय धर्मपाल देश के बँटवारे के बाद सियालकोट (पाकिस्तान) से दिल्ली आये। बड़ी कठिनाई के दिन थे। दिल्ली के करोलबाग क्षेत्र में एक कच्चे मकान में वे

अपने माता-पिता के साथ रहने लगे। एक दिन वह अपने पिता के साथ एक मसाले की दुकान में गए। यहाँ ही उन्होंने निश्चय किया कि वह भी मसाला बनाने का पुश्तैनी व्यवसाय प्रारम्भ करेंगे। प्रारम्भ में बहुत छोटे स्तर पर काम प्रारम्भ किया। लेकिन कठोर परिश्रम, लगन, ईमानदारी और मुँह में मिठास के कारण काम तेजी से बढ़ने लगा। कई वर्षों तक उन्होंने स्वयं दुकान-दुकान जाकर मसाला बेचा फिर धीरे-धीरे मसालों की शुद्धता और गुणवत्ता के कारण काम व्यापक स्तर पर होने लगा।

महाशय धर्मपाल गुलाटी आज ९२ साल की आयु के हैं लेकिन उनमें युवकों के समान उत्साह है। वह पक्के आर्य समाजी हैं,

नित्य प्रति घर तथा कम्पनी में हवन यज्ञ करना उनका दैनिक संस्कार है। आर्य केन्द्रीय सभा के अध्यक्ष होने के नाते उन्हें अनेक सामाजिक कार्य करने होते हैं। केवल आर्य समाज ही नहीं बल्कि अनेक सामाजिक संस्थाओं के आप मार्गदर्शक हैं। हम सबने महाशय जी को दूरदर्शन तथा समाचार पत्रों में एम.डी.एच.कम्पनी के विज्ञापनों में अवश्य देखा होगा। सफेद कपड़े, लाल पगड़ी और मोती की माला उनके व्यक्तित्व के हिस्से हैं। गुलाटी जी का जीवन मिसाल है उन सभी के लिए जो जीवन में नई इबारत लिखना चाहते हैं। महाशय धर्मपाल गुलाटी आज हमारे प्रेरणा स्रोत हैं।

महाशय जी के ९२ वें जन्मदिवस पर उनके निरामय दीर्घायुष्य की कामना के साथ न्यास व सत्यार्थ सौरभ परिवार के सभी सदस्य हार्दिक शुभकामनाएँ सम्प्रेषित करते हैं।

उनके अनुसार सफलता का मूल मंत्र है-कठोर परिश्रम एवं दृढ़ विश्वास।

कवि के शब्दों में हम कहना चाहेंगे-

हम अनुगामी उन पाँवों के आदर्श लिए जो खड़े रहे,
बाधाएँ जिन्हें डिगा न सकीं, संघर्षों में अड़े रहे,
सर पर मंडराता काल रहे, करवट लेता भूचाल रहे,
बढ़ना ही अपना काम है, बढ़ना ही अपना काम है।

- कृष्ण बोहरा (सेवानिवृत्त प्रिन्सिपल)
मुहल्ला जेल ग्राउण्ड, मकान नं. ६४१,
सिरसा (हरियाणा)

जीवात्मा ईश्वर नहीं, ईश्वर का मित्र बन सकता है

मनमोहन कुमार आर्य

मनुष्य जीवन का उद्देश्य है उन्नति करना। संसार में ईश्वर सबसे बड़ी सत्ता है। जीवात्माओं की ईश्वर से पृथक् स्वतन्त्र सत्ता है। जीवात्मा को अपनी उन्नति के लिए सर्वोत्तम या बड़ा लक्ष्य बनाना है। सबसे बड़ा लक्ष्य तो यही हो सकता है कि वह ईश्वर वा ईश्वर के समान बनने का प्रयास करे। प्रश्न यह है कि मनुष्य यदि प्रयास करे तो क्या वह ईश्वर बन सकता है? इसका उत्तर विचारपूर्वक दिया जाना समीचीन है। इसके लिए ईश्वर तथा जीवात्मा, दोनों के स्वरूप को जानना होगा। ईश्वर क्या है? ईश्वर वह है जिससे यह संसार अस्तित्व में आता है अर्थात् ईश्वर इस सृष्टि या जगत् का निमित्त कारण है। निमित्त कारण किसी वस्तु के बनाने वाले चेतन तत्व व सत्ता को कहते हैं। इसमें ईश्वर भी आता है और मनुष्य वा जीवात्मा भी। ईश्वर ने इस सारे संसार को रचकर बनाया है। ईश्वर ने अमैथुनी सृष्टि में हमारे पूर्वजों अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा, ब्रह्मा आदि पुरुषों सहित स्त्रियों को भी बनाया और उसके बाद से वह मैथुनी सृष्टि द्वारा मनुष्य आदि और समस्त प्राणियों की रचना कर उन्हें जन्म देता आ रहा है।

ईश्वर के कार्यों में सृष्टि की रचना कर उसका संचालन

करना और अवधि पूरी होने पर प्रलय करना भी सम्मिलित है। जिसे वह इस सृष्टि के कल्प में विगत १ अरब ९६ करोड़ वर्षों से करता आ रहा है। इससे पूर्व भी वह अनन्त बार अनन्त कल्पों में सृष्टि की रचना कर उसका पालन करता रहा है। वह यह कार्य इसलिए कर पाता है कि उसका स्वरूप सच्चिदानन्द (सत्य, चित्त व आनन्द) स्वरूप है। वह सर्वज्ञ, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है। जीवों के पुण्य व पापों के अनुसार जीवों को भिन्न-भिन्न योनियों में भेजकर उन्हें उनके अनुसार सुख-दुःख रूपी फल देना भी ईश्वर का कार्य है और यह भी उसका स्वरूप है। दूसरी ओर जीवात्मा के कुछ गुण ईश्वर के अनुरूप हैं व कुछ भिन्न। जीवात्मा अर्थात् हम वा हमारा आत्मा अर्थात् हमारे शरीर में विद्यमान चेतन तत्व है। यह या इसका स्वरूप कैसा है? जीवात्मा सत्य पदार्थ, चेतन तत्व, आनन्द रहित व ईश्वर से आनन्द की अपेक्षा रखने व प्राप्त करने वाला, अल्पज्ञ, निराकार, अल्प व सीमित शक्ति से युक्त, न्याय व अन्याय करने वाला, अजन्मा, अनादि, अविनाशी, अमर जिसका आधार ईश्वर है, ईश्वर से ऐश्वर्य प्राप्त करने वाला, एकदेशी, ससीम, ईश्वर से व्याप्य, अजर, नित्य व पवित्र है। यह कर्म करने में स्वतन्त्र तथा उनका फल भोगने में ईश्वर की व्यवस्था में परतन्त्र है। ईश्वर की उपासना करना इसका कर्तव्य है।

जीवात्मा और ईश्वर का वेदसम्मत युक्ति व तर्कसम्मत स्वरूप उपर्युक्त पंक्तियों में वर्णित है। जीवात्मा के स्वाभाविक गुणों में अल्पज्ञता, नित्य व इसका अनादि होना आदि गुण हैं जो सर्वज्ञता में कदापि नहीं बदल सकते। ईश्वर अपने स्वाभाविक गुण के अनुसार ही सर्वज्ञ है। जीवात्मा अल्प शक्तिशाली है तो ईश्वर सर्वशक्तिमान है। ईश्वर सृष्टि को बनाकर इसका सफलतापूर्वक संचालन करता है। यह कार्य जीवात्मा कितनी भी उन्नति कर ले नहीं कर सकता। ईश्वर सर्वव्यापक है और जीवात्मा एकदेशी। जीवात्मा अधिकतम उन्नति कर ले तो भी सर्वव्यापकता को प्राप्त नहीं कर सकता। इसी प्रकार से जीवों की अपनी सीमाएँ हैं। अतः जीवात्मा सदा जीवात्मा ही रहेगा और ईश्वर सदा ईश्वर रहेगा। यह जान लेने के बाद यह जानना शेष है कि जीवात्मा अधिकतम उन्नति कर किस स्थान को प्राप्त कर सकता है? इसका उत्तर यह मिलता है कि जीवात्मा के अन्दर मुख्य रूप से दो गुण विद्यमान हैं। एक ज्ञान व दूसरा कर्म या क्रिया। जीवात्मा अल्पज्ञ और ससीम होने से सीमित ज्ञान ही प्राप्त कर सकता है और सीमित कर्म या क्रियाएँ ही कर सकता है। ज्ञान प्राप्ति व कर्म करने में भी इसे ईश्वर की सहायता की अपेक्षा है। ईश्वर ने जीवात्मा में ज्ञान की उत्पत्ति के लिए सृष्टि के आरम्भ में

चार वेदों ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद का ज्ञान चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा के माध्यम से दिया था जो विगत १ अरब ९६ करोड़ वर्षों से यथावत् चला आ रहा है। वेदों में एक साधारण तिनके से लेकर सभी सृष्टिगत् पदार्थों व संसार की सबसे सूक्ष्म व बड़ी सत्ता ईश्वर तक का आवश्यक ज्ञान दिया गया है। ईश्वर प्रदत्त ज्ञान होने से यह पूर्णतया निर्भ्रान्त सत्य ज्ञान है और परम प्रमाण है। यह भी कह सकते हैं कि वेदों में सत्य ज्ञान की पराकाष्ठा है। जीवात्मा परम्परानुसार पुरुषार्थ व तप पूर्वक वेदों का ज्ञान अर्जित कर सर्वोच्च उन्नति पर पहुँच सकता है। यही उसका उद्देश्य व लक्ष्य भी है। जीवात्मा में दूसरा गुण कर्म करने का है। कर्म भी मुख्यतः शुभ व अशुभ भेद से दो प्रकार के हैं। उसे कौन से कर्म करने हैं और कौन से नहीं, इसका ज्ञान भी वेदों से मिलता है। अन्य

सामान्य आवश्यक कर्मों के साथ ईश्वरोपासना, अग्निहोत्र यज्ञ, माता-पिता-आचार्य व विद्वान् अतिथियों की सेवा तथा सभी प्राणियों के प्रति मित्रता का भाव रखते हुए उनके जीवनयापन में सहयोगी होना ही मनुष्य के मुख्यः कर्म हैं जो उन्हें नियमित रूप से करने होते हैं। इनमें अनध्याय नहीं होता। इस प्रकार वेदों का ज्ञान प्राप्त कर वेद विहित कर्मों को करके मनुष्य उन्नति के शिखर पर पहुँचता है। इसके अलावा जीवन की उन्नति का अन्य कोई मार्ग है ही नहीं। केवल धन कमाना और सुख सुविधाओं को एकत्रित करना ही जीवन का उद्देश्य नहीं है। धर्म व सदाचार पूर्वक धन कमाना यद्यपि धर्म के अन्तर्गत आता है परन्तु इससे जीवन की सर्वांगीण उन्नति नहीं हो सकती। इसके लिए तो वेद विहित व निर्दिष्ट सभी करणीय कर्मों को करना होगा और निषिद्ध कर्मों का त्याग करना होगा।

ईश्वरोपासना व अग्निहोत्र आदि वेद विहित कर्मों को करके मनुष्य की ईश्वर से मित्रता हो जाती है अर्थात् जीवात्मा ईश्वर का सखा बन जाता है।

महर्षि दयानन्द, मर्यादा पुरुषोत्तम राम, योगेश्वर कृष्ण, पतंजलि, गौतम, कपिल, कणाद, व्यास, जैमिनी, पाणिनी तथा यास्क आदि ऋषियों ने सम्पूर्ण वेदों का ज्ञान प्राप्त कर वेदानुसार कर्म करके ईश्वर का सान्निध्य, मित्रता व सखाभाव को प्राप्त किया था। यह ईश्वर तो नहीं बने परन्तु ईश्वर के सखा अवश्य बने। यह सभी विद्वान् भी थे और धर्मात्मा भी। महर्षि दयानन्द ने अपने ग्रन्थ 'व्यवहारभानु' में एक प्रश्न उठाया है कि क्या सभी मनुष्य विद्वान् व धर्मात्मा हो सकते हैं? इसका युक्ति व प्रमाणसिद्ध उत्तर उन्होंने स्वयं दिया है कि सभी विद्वान् नहीं हो सकते परन्तु धर्मात्मा सभी हो सकते हैं। ईश्वर का मित्र बनने के लिए वेदों का विद्वान् बनना व वेद की शिक्षाओं का आचरण कर धर्मात्मा बनना मनुष्य जीवन की उन्नति का शिखर स्थान है। इससे ईश्वर से सखाभाव बन जाता है। यदि कोई विद्वान् न भी हो तो वह विद्वानों की संगति कर उनके मार्गदर्शन में ऋषि-मुनियों के ग्रन्थों का स्वाध्याय कर धर्मात्मा बन कर ईश्वर से मित्रता व सखाभाव उत्पन्न कर सकता है और जीवन सफल बना सकता है। यह सफलता धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष इन चार पुरुषार्थों का युग्म है। यह वेद के ज्ञान से सम्पन्न और वेदानुसार आचरण करने वाले योगियों या ईश्वर भक्तों को ही प्राप्त होती है। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि आजकल प्रचलित मत-मतान्तरों के अनुयायियों को ईश्वर का यह मित्रभाव पूर्णतः प्राप्त नहीं हो सकता, आंशिक व न्यून ही प्राप्त हो सकता है। यह सभी मत-मतान्तर धर्म नहीं हैं। यह विष मिश्रित अन्न के समान त्याज्य हैं इसलिए कि इनमें सत्य व असत्य दोनों का मिश्रण हैं। पूर्ण सत्य केवल वेदों में है जिसे स्वाध्याय द्वारा जाना जा सकता है। आईये, वेदों की शरण में चलें और वेदाचरण कर ईश्वर से मित्रभाव वा सखाभाव प्राप्त कर अपने जीवन की उच्चतम उन्नति कर धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को प्राप्त करें। यह मित्रभाव ऐसा होता है कि दोनों एक तो नहीं बनते लेकिन लगभग समान कहे जा सकते हैं।

१९६ चुक्खूवाला-२, देहरादून-२४८००१
चलभाष- ०९४१२९८५१२१

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश(म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

* न्यास द्वारा ON LINE TEST प्रारम्भ।
* वर्ष में तीन बार दिया जावेगा ५१०० रु. का उपरोक्त पुरस्कार।
* आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
* विश्व भर के लोगों से इस ON LINE TEST में भाग लेने का अनुरोध।

बेवसाइट - www.satyarthprakashnyas.org

स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती

सेवा तथा सामाजिक उत्थान हेतु समर्पित - स्वामी सुमेधानन्द

क्या कोई मान सकता है कि हरियाणा के देहाती वातावरण में जन्मा, पला, बढ़ा बालक कालान्तर में ऋषि दयानन्द तथा आर्यसमाज की शिक्षा से प्रभावित होकर न केवल संस्कृत तथा वैदिक साहित्य का उच्च कोटि का ज्ञान प्राप्त करेगा, किन्तु बुद्ध, शंकर, दयानन्द का आदर्श उपस्थित कर युवावस्था में संन्यास ग्रहण कर स्वयं को 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' प्रस्तुत करेगा अपितु पुत्र, लोक, वित्त इन त्रिविध ऐषणाओं से मुक्त होने के लिए कटिबद्ध हो जायेगा। यों तो संन्यासी का आदर्श 'वसुधैव कुटुम्बकम्' होने के कारण समस्त धरती ही उसका कार्यक्षेत्र होती है तथापि इस युवा साधु ने समीपवर्ती राजस्थान के श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, सीकर आदि जिलों को अपने कार्य के लिए चुना। मेरी उनसे पहली मुलाकात श्रीगंगानगर में आयोजित प्रान्तीय आर्य महा सम्मेलन में हुई जिसके वे संयोजक थे। यहाँ प्रान्त के अनेक आर्य नेता उपस्थित थे। स्व. छोटू सिंह जी ने तो स्वामीजी की पगड़ी और उसके बाँधने के स्टाइल को देखकर मुझसे कहा- भारतीय जी यह कोई वेशपन्थी यहाँ घुस आया? मैंने कहा- अकारण कोई धारणा बनाना उचित नहीं। **न लिंग धर्म कारणम्** (मनु.) मात्र बाह्य चिह्न धर्म का लक्षण नहीं है। यह सेवाभावी, समर्पित आर्य संन्यासी हैं। इनका इस प्रान्त में आना शुभ है।

स्वामी सुमेधानन्द अब प्रमुखतः आर्य समाज और साथ ही आर.एस.एस. से जुड़े। उन्होंने राजस्थान के इस पश्चिमी अंचल में धर्म प्रचार, नशा निवारण, कुरीतियों का मूलोच्छेद आदि अनेक रचनात्मक कार्य किये। अन्ततः उन्होंने सीकर के निकट पिपराली ग्राम को अपने कार्य के लिए उपयुक्त पाया और मुख्य राजमार्ग पर वैदिक आश्रम स्थापित कर सेवा और समाजिक नवनिर्माण का कार्य अधिक तीव्रता से आरम्भ किया। १९९७ में स्थापित यह आश्रम नशाबंदी के कार्यक्रम आयोजित कर युवकों में फैली इस बीमारी को दूर करने के लिए यत्नशील रहा। साथ ही प्रौढ़ शिक्षा, गोसेवा, आयुर्वेद पर आधारित चिकित्सा, योग का प्रशिक्षण, अस्पृश्यता निवारण, भ्रूण हत्या विरोध, बाल विवाह उन्मूलन आदि रचनात्मक कार्य आरम्भ किये। कालान्तर में आप योग ऋषि बाबा रामदेव के कार्यक्रमों से भी जुड़े और यत्र-तत्र व्याख्यान प्रवचनादि से जागृति उत्पन्न की।

"नवलखा महल आर्यों को हस्तगत् कराने में पूज्य स्वामी जी तथा न्यास के आजीवन अध्यक्ष स्वामी तत्त्वबोध सरस्वती जी का ही सर्वाधिक योगदान था। आज भी स्वामी सुमेधानन्द जी का सतत् मार्गदर्शन न्यास को प्राप्त है। - संपादक"

आर्य समाज में आपकी गतिविधियाँ जिला स्तर से आगे बढ़ीं। आपने प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के मंत्री तथा प्रधान के पद पर कार्य किया, साथ ही आर्य समाज के वैश्विक संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारी के रूप में दिल्ली के दयानन्द भवन से वैदिक धर्म प्रचार को प्रगति दी। कालान्तर में जब मा. भैरोसिंह शेखावत (तत्कालीन मुख्यमंत्री) के कार्यकाल में उदयपुर का नवलखा महल स्वामी दयानन्द के स्मारक के रूप में आर्य समाज द्वारा स्थापित ट्रस्ट को मिला तो उसके प्रमुख ट्रस्टी के रूप में आपने इस भव्य स्मारक के उत्तरोत्तर विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

यों तो हम संन्यासी को श्रेयस्कामी, मोक्षपथ का अन्वेषक तथा सर्वसंग परित्यागी मानते हैं, यह उचित भी है, तथापि यह भी स्मरण रखना होगा कि सेवा, परोपकार तथा समाज का हित चिन्तन भी संन्यासी का कर्त्तव्य होता है। विगत में दयानन्द, विवेकानन्द आदि उन चतुर्थाश्रमियों के उदाहरण हमारे समक्ष हैं जिन्होंने नर में नारायण को देखा और लोकहित को अपने जीवन का लक्ष्य बनाया। वर्तमान में भी बिहार के स्वामी सहजानन्द, गोरखपुर की गोरस पीठ के विगत अधिष्ठाता महन्त दिग्विजयनाथ तथा म. अवेद्यनाथ, वर्तमान में योगी आदित्यनाथ, आर्य समाज के स्वामी रामेश्वरानन्द, ब्यावर के स्वामी कुमारानन्द आदि विरक्त महात्माओं ने देश हित तथा समाज हित को सदा महत्व दिया।

स्वामी सुमेधानन्द भी इन्हीं महापुरुषों के पथ पर चल पड़े और आर्यसमाज, आर.एस.एस. तथा अन्य संस्थाओं से सम्बन्ध रहे। इसी का परिणाम है कि सीकर जिले की जनता ने आपको सांसद के गौरवमय स्थान पर पहुँचाया है। मैं व्यक्तिशः स्वामीजी के सम्पर्क में आया हूँ और मैंने अनुभव किया है कि जो सेवा और समाज के नवनिर्माण का लक्ष्य लेकर वे अब बृहत्तर कर्मक्षेत्र में उतरे हैं, उसमें वे सफल होंगे। स्वामीजी वाणी तथा लेखनी दोनों माध्यमों से अपने विचारों को व्यक्त करने में व्युत्पन्न हैं और सर्वोपरि बात तो यह है कि किसान परिवार में जन्म लेने के कारण आम आदमी की समस्याओं से परिचित हैं।

प्रस्तुति- डॉ. भवानी लाल भारतीय
३/५ शंकर कॉलोनी, श्रीगंगानगर

नवसंवत्सर के अवसर पर विशेष

विक्रम संवत- मूल्यांकन व नियोजन का अवसर

डॉ. सन्तोष गौड़ 'राष्ट्रप्रेमी'

परिवर्तन प्रकृति का नियम है, कालचक्र कभी रुकता नहीं यह अटल सत्य है। आज तक कोई भी समय को नही बाँध पाया है। समय का हर पल नवीन व गतिशील होता है। समय की धारा को रोकना या खण्ड-खण्ड करना संभव नहीं। हाँ, अपनी उपलब्धियों के मूल्यांकन के लिए समय को विभिन्न कालखण्ड़ों में विभाजित करने का प्रयास प्राचीन काल से ही मानव करता रहा है। पल, क्षण, घड़ी, सेकैण्ड, मिनिट, घण्टे, दिन, सप्ताह, पखवाड़ा, माह, संवत् या वर्ष इसी प्रकार के शब्द हैं जिनके माध्यम से हम अपनी योजनाएँ बनाते हैं व उपलब्धियों का मूल्यांकन करते हैं। प्राचीन काल से ही काल गणना के लिए अनेक संवत् व वर्ष मिलते हैं। राष्ट्रीय शक संवत्, वीर संवत्, हिजरी संवत्, विक्रम संवत् व ईस्वी सन् आदि काल गणनाओं से ईस्वी सन् ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर स्थान बना लिया है। यद्यपि भारतीय सांस्कृतिक दृष्टिकोण से विक्रम संवत् को महत्वपूर्ण माना जाता है, अतः नव वर्ष २०१५ का प्रारम्भ हमारे लिए गतवर्ष के मूल्यांकन व आगामी वर्ष के नियोजन का सुन्दर अवसर है।

कोई व्यक्ति किसी भी काल गणना को क्यों न मानता हो किन्तु इतना अवश्य है कि हम नवीन वर्ष के प्रारम्भ होने पर आपस में शुभकामनाओं का आदान-प्रदान करते हैं, वास्तव में इन शुभकामनाओं का कोई प्रभाव उस समय तक नहीं होगा जब तक हम गत वर्ष में की गई त्रुटियों को सुधारने व नव वर्ष में योजनाबद्ध ढंग से समय का सदुपयोग करने का संकल्प नहीं लेते और उसका क्रियान्वयन नहीं करते। यह तो मूल्यांकन व नियोजन के आधार पर ही संभव है। अतः मेरी तरफ से सभी को नव वर्ष की शुभकामनाएँ है। साथ ही इन शुभकामनाओं की सफलता के लिए आप से अपेक्षा है कि आप निम्नलिखित बातों को अपनी योजना के निर्माण व क्रियान्वयन में ही नहीं, हर पल ध्यान रखें। ताकि आपका नव वर्ष शुभ हो सके-

१. गत वर्ष का मूल्यांकन अवश्य करें, वास्तव में आप समय का कितना ही सही उपयोग कर पायें कहीं न कहीं छिद्र रह ही जाते हैं। अतः क्या करना था और क्या करने में सफल हुए? क्या खोया? क्या पाया? आपने अपने जीवन का एक बहुमूल्य वर्ष कहीं खो तो नहीं दिया? जी हाँ, जो समय का सदुपयोग नहीं करते, उनका समय खोता ही है। अतः गंभीरतापूर्वक चिंतन-मनन करें। आपने अपने लिए, परिवार के लिए, गाँव, प्रदेश, राष्ट्र व समाज के लिए, राष्ट्रीय संस्कृति व जीवन मूल्यों के लिए किस प्रकार जिया है? कहाँ-कहाँ त्रुटियाँ हुई हैं? आकलन, विचार, चिन्तन व मनन के पश्चात् नव वर्ष के लिए योजना बनाएँ कि क्या करना है? कितना करना है? किसको करना है? कहाँ करना है? कैसे करना है? वास्तव में हम जो कर्म कर लें वही हमारा सही समय है। गीता का सन्देश सदैव याद रखें- **'कर्मण्येवाधिकारस्तु मा फलेषु कदाचन्'** अतः निर्लिप्त भाव से कर्म करें।

२. वैयक्तिक, पारिवारिक व सामाजिक कर्तव्यों को समझें, मनन करें व सन्तुलन बनाने का प्रयत्न करें। सभी कर्तव्यों को सन्तुलन के साथ निर्वाह करने में ही हमारी सफलता है, किन्तु यदि ऐसा अवसर हो कि हमें कई कर्तव्यों में से एक का चुनाव करना हो तो अधिमान देते समय सदैव याद रखें-

'त्यजेद एकम् कुलस्यार्थे, ग्रामस्यार्थे कुलम् त्यजेद्।
ग्रामं जनपदस्यार्थे, आत्मार्थे पृथ्वी त्यजेद।।'

अर्थात् कुल के हित के लिए एक के हित का त्याग करें; ग्राम के हित के लिए कुल के हित का त्याग करें; जनपद के लिए ग्राम के हित का त्याग करें; प्रदेश के हित के लिए जनपद के हित का त्याग करें; राष्ट्र के हित के लिए प्रदेश के हित का त्याग करें; पृथ्वी के हित के लिए राष्ट्र के हित का त्याग करें तथा संपूर्ण आत्माओं अर्थात् प्राणीमात्र का हित होता हो तो पृथ्वी का त्याग करने के लिए भी प्रस्तुत रहें। अपने कर्तव्यों के निर्धारण में इस श्लोक से मार्गदर्शन प्राप्त करेंगे तो कभी भी किसी का अहित नहीं होगा क्योंकि 'हाथी के पाँव में सबका पाँव'।

३. स्मरण रखें उत्तरदायित्वों के निर्वाह के लिए आपका स्वस्थ रहना आवश्यक है।

अतः अपने उत्तरदायित्वों का निर्वाह करते समय अपने प्रति कर्तव्यों का भी ध्यान रखें। भौतिक भोग-विलास की सुविधाओं के उपभोग से कमजोर न पड़ें, साथ ही जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं का समय से पूरा होना भी

आवश्यक है, ताकि सामाजिक, राष्ट्रीय व पारिवारिक उत्तरदायित्वों का पूर्ण समर्पण भाव से निर्वाह किया जा सके। बीमार व कमजोर शरीर व मन लेकर आप किसी भी उत्तरदायित्व का निर्वाह नहीं कर सकते। परिवार, देश व समाज के लिए अपना शारीरिक, मानसिक व बौद्धिक विकास करने के प्रयत्न आजीवन करते रहें।

४. सत्य और स्पष्टता आपको विश्वासपात्र बनाते हैं। विश्वास और आस्था के बिना किसी भी कार्य में सफलता नहीं मिल सकती। यह दोनों खरीदे नहीं जा सकते और न ही बदले में प्राप्त हो सकते हैं। आस्था और विश्वास को विरासत या आशीर्वाद से प्राप्त करना ही संभव नहीं है। जबकि विश्वास और आस्था जीवन की सबसे बड़ी पूँजी है। अतः विश्वासपात्र बनें ताकि शत्रु भी आपकी बात पर भरोसा कर सकें। साथ ही सावधान भी रहें वर्तमान समय में आँख बन्द करके किसी पर भी विश्वास नहीं किया जा सकता; अविश्वास करके किसी का सहयोग प्राप्त नहीं किया जा सकता। अतः किसी पर अविश्वास भी प्रकट न करें। शक करना व जिज्ञासा रखना सच्चाई जानने के आदर्श तरीके हैं। पूरी जाँच-पड़ताल करके प्रमाणित हो जाने के बाद ही किसी पर भरोसा करें। सदैव याद रखें-

विश्वास किसी पर नहीं है करना, अविश्वास से भी है डरना।
कोई कितना भी अपना हो, सोच समझ कर निर्णय करना।।

५. याद रखें 'सत्य हारता हुआ प्रतीत होता है किन्तु कभी हारता नहीं।' अल्पकाल में भले ही असत्य, भ्रष्टाचार, छल-कपट व फरेब आकर्षक लगते हों किन्तु सत्य के आगे इन्हें पराजय ही हाथ लगती है। अतः जोखिम उठाकर भी सदैव सत्य का साथ दें। सत्य का साथ छोड़ना ही आपकी पराजय का प्रमाण होता है। यदि आप सही हैं और आपमें साहस है तो कभी भी सत्य का साथ नहीं छोड़ेंगे। सत्य ही आपकी विश्वसनीयता का आधार होगा। सत्य की परिभाषा में न उलझें, अपनी सुविधा के लिए सत्य को जटिल न बनायें। अपनी आत्मा की आवाज सुनें और सत्यपथ पर निरंतर प्रगतिशील रहें। सत्य को कभी प्राप्त नहीं किया जा सकता। इसके लिए तो साधनारत् रहना है।

६. धन से भौतिक भोग-विलास की सामग्री भले ही खरीदी जा सके किन्तु सुख और शान्ति नहीं खरीदी जा सकती। सुख और शान्ति अमूल्य निधि हैं जिन्हें सत्य, कर्तव्य परायणता व आस्था से ही पाया जा सकता है। धन जीवन के लिए आवश्यक अवश्य है किन्तु धन ही सब-कुछ नहीं। आखिर आपको धन किसलिए चाहिए। अपने व अपने परिवार के जीवनयापन के लिए ही न, इसलिए सदैव याद रखें- 'धन आपके लिए है, आप धन के लिए नहीं। किसी भी कीमत पर धन कमाना बहुत मँहगा सौदा है। आत्मसम्मान व परिवार की गुणवत्ता को दाँव पर न लगायें। आपका जीवन अमूल्य है, इसे धन से नहीं तौला जा सकता और ऐसे धन का आप क्या करेंगे जो आपके परिवार को ही बिखरा दे या आप को आपके परिवार से दूर कर दे या आपकी व आपके परिवार की शान्ति भंग कर दे। अतः धन को निश्चित ही महत्व दें। यह महत्वपूर्ण है किन्तु उससे भी महत्वपूर्ण चीजें भी हैं और उनका ध्यान उससे अधिक रखें। धन जीवन का लक्ष्य नहीं, यश प्राप्ति भी महानता नहीं; कर्तव्यपालन के आगे सभी कुछ तुच्छ है-

अधम मरत फँस धन हि में, मध्यम धन और मान।
ऊँचे केवल मान में, फँसते नहीं महान्।।

७. योजना, क्रियान्वयन व मूल्यांकन प्रबन्ध प्रक्रिया के अनिवार्य घटक हैं जो सार्थक जीवन जीने के लिए आवश्यक हैं। प्रातःकाल दिनभर की योजना बना लें, दिन में क्रियान्वयन करें तथा रात्रि को सोने से पूर्व मूल्यांकन अवश्य करें कि आज के दिन का कितना सदुपयोग हुआ। नियमित डायरी लेखन की आदत सोने में सुहागा सिद्ध होगी। डायरी

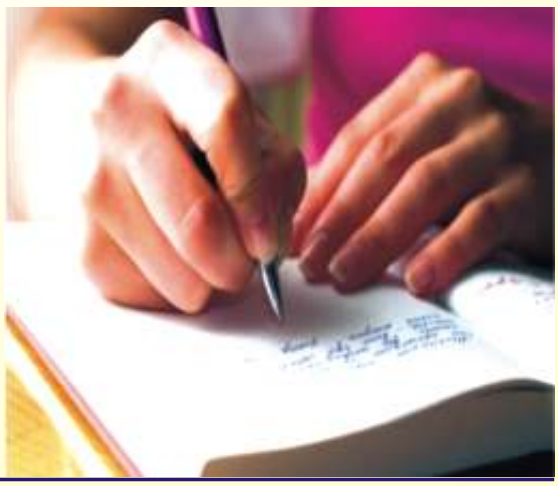

वह साधारण उपकरण है, जो साधारण मानव को असाधारण महामानव में परिवर्तित कर सकती है। नये वर्ष के अवसर पर डायरी का प्रयोग करना प्रारंभ कर सकें तो अत्यन्त उपयोगी निर्णय सिद्ध हो सकता है।

८. चिन्तन करें, चिन्ता नहीं; विवेकपूर्ण निर्णय लें, उतावलेपन में नहीं; आवश्यकतानुसार क्रोध का प्रदर्शन करें किन्तु क्रोध आपकी बुद्धि पर हावी नहीं होना चाहिए। **किसी विद्वान् का कथन है, 'क्रोध हर कोई कर सकता है, किन्तु आवश्यकतानुसार कब? किस पर? कितनी मात्रा में? किस प्रकार से? क्रोध करना है इसका निर्धारण करके क्रोध करना सबके बस की बात नहीं।' शिष्टता व शालीनता का मतलब यह नहीं कि प्रत्येक उल्टी-सीधी बात को स्वीकार कर लिया जाय। शिष्टता, शालीनता, विनम्रता व दृढ़ता के साथ विरोध व्यक्त करना आपकी कार्य कुशलता व विश्वसनीयता को कई गुणा बढ़ा सकता है। माता-पिता, अपने से बड़े लोगों के प्रति सम्मान का भाव ही नहीं उनके प्रति कर्तव्यों का भी पालन करना है किन्तु इन कर्तव्यों में अनुचित आज्ञाओं का** पालन सम्मिलित नहीं है। अपने नेताओं व अधिकारियों के लिए अपेक्षित सम्मान का भाव तो रखें किन्तु आँख बन्द करके आदेशों का पालन करना देश व समाज के अहित में भी हो सकता है। अतः देशहित में अनुशासन की जंजीरों में बँधकर रहना भी उचित नहीं है। प्रत्येक कार्य आपके अपने विवेकपूर्ण निर्णय के अनुसरण में होना चाहिए।

आशा है आप उपरोक्त बिन्दुओं पर विचारकर अपने विवेक का प्रयोग करते हुए सामाजिक, राष्ट्रीय, पारिवारिक व वैयक्तिक उत्तरदायित्वों में सन्तुलन बनाते हुए, नव वर्ष में अपने समय का सदुपयोग करने में सफल होंगे। यही नहीं अपने समय के सदुपयोग के द्वारा न केवल स्वयं अपने नव वर्ष को शुभ बनायेंगे बल्कि अपने अन्य भाइयों को भी प्रेरित करने में सफल होंगे। इसी विश्वास के साथ आपको, आपके परिवार को अपनी इस भारतभूमि सहित समस्त विश्व समुदाय को मेरी ओर से नव वर्ष की कोटि-कोटि शुभकामनाएँ।

- जवाहर नवोदय विद्यालय
खुंगा-कोठी, जींद (हरियाणा)

घड़ी

कथा सरित

एक किसान की घड़ी एक दिन खेत में जब वह कार्य कर रहा था, तब भुस के अन्दर गिर गयी। घड़ी का किसान के लिए अत्यधिक महत्व इसलिए था कि वह उसके पिता की अन्तिम निशानी थी। इस भावनात्मक पहलू के कारण किसान घड़ी के खो जाने से अत्यन्त दुःखी था। उसने स्वयं भुस के अन्दर घड़ी खोजने की काफी कोशिश की परन्तु असफल रहा।

वहीं पर कुछ बच्चे भी खेल रहे थे। किसान ने बच्चों को कहा कि जो कोई भी उसकी घड़ी ढूढ़कर लाएगा, उसे वह इनाम देगा। सभी बच्चे इनाम पाने की प्रत्याशा में भुस के ढ़ेर में घुस गए तथा जोर शोर से घड़ी की तलाश करने लगे। पर सभी के हाथ असफलता लगी। अन्ततोगत्वा किसान को निश्चय हो गया कि घड़ी अब नहीं मिलेगी। इतने में एक बच्चा उसके पास आया और बोला कि वह उसे एक अवसर और दे। किसान ने कहा ठीक है तुम एक बार और कोशिश कर लो। बच्चा भुस के ढेर में घुस गया तथा थोड़ी देर में घड़ी लेकर बाहर आ गया।

किसान को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने बच्चे से पूछा कि उसने घड़ी कैसे ढूढ़ीं। बच्चे ने कहा कि मैंने कुछ नहीं किया बस भुस के ढेर में जाकर शान्ति से बैठ गया। थोड़ी देर बाद मुझे घड़ी की टिक-टिक सुनायी दी। और इस प्रकार मुझे घड़ी मिल गयी।

इस छोटी सी कहानी से शिक्षा मिलती है कि विपत्ति के समय में हमें धैर्य रखकर शान्तिपूर्वक अपने मस्तिष्क को संतुलित रखना चाहिए। निश्चित ही हमें समाधान भी मिल जाएगा।

संकलन- नारायण मित्तल, उदयपुर

सुत दारा अरु लक्ष्मी पापी के भी होय।
सन्त समागम हरिभजन तुलसी दुर्लभ दोय।।

महाकवि सन्त तुलसीदास जी भगवान की भक्ति और सन्त पुरुषों की संगति के महत्व का वर्णन करते हुए कहते हैं कि इस नश्वर संसार में पुत्र, स्त्री और लक्ष्मी अर्थात् धन दौलत तो पाप करने वाले पापी व्यक्ति को भी प्राप्त हो जाती है परन्तु सन्त पुरुषों का साथ और प्रभु भक्ति संसार में दुर्लभ है जो मनुष्य को बड़ी कठिनाई से प्राप्त होती है।

इसी शृंखला में तुलसीदास जी ने स्वरचित 'रामचरित मानस' में भरत जी के चरित्र का अनुपम, अद्वितीय, भक्ति से परिपूर्ण और अनुकरणीय वर्णन किया है। जो इस संसार में विरला ही प्राप्त होता है। भरत जी भ्रातृ प्रेम, सेवक भाव और गुरु भक्ति में अपार अटूट श्रद्धा रखते थे तथा त्याग और तपस्या की साक्षात मूर्ति थे। इसके साथ-साथ श्री राम

श्रीराम-भरत का भ्रातृ प्रेम

– सुमित्रा मित्तल

चरण में उनका तन-मन-धन सदैव अर्पित रहता था।

जिस समय श्री राम को वन जाने का आदेश प्राप्त हुआ उस समय अपनी ननिहाल गए हुए थे। जैसे ही वह वहाँ से लौटकर महल में प्रवेश करते हैं शीघ्र ही माता कैकेयी आरते का थाल सजाकर उनके स्वागतार्थ उनके सम्मुख आती हैं। परन्तु उनका प्रसन्नता से युक्त आह्लादपूर्ण चेहरा भरत को प्रभावित नहीं कर सका। सर्वप्रथम उन्होंने अपने भाई श्री राम, माता सीता और भाई लक्ष्मण की कुशलता के विषय में पूछा।

जब माता कैकेयी ने उनको बताया कि उन्होंने उनके लिए राजगद्दी और श्री राम के लिए १४ वर्ष का वनवास उनके पिता से माँग लिया है, तो वह यह सुनकर अत्यन्त दुःखी हो गए और अपनी माता से कुछ न कहकर सीधे माता कौशल्या के महल को गए। वहाँ माता कौशल्या संतप्त दशा में बैठी हुई थीं। स्वयं को निर्दोष बताते हुए श्री भरत ने कहा- हे माता, मैं वनाग्नि के समान हूँ। वह तो केवल वन को ही जलाती है परन्तु मैंने तो अपने सम्पूर्ण वंश का ही नाश कर दिया है।

भरत के विषादपूर्ण वचन सुनकर माता कौशल्या श्री राम के समान ही प्रेम करते हुए भरत को अपनी गोद में बिठाकर समझाती हैं कि-हे पुत्र! राम धीर, गम्भीर हैं। वे समभाव से वनवासी वेश में वन गए हैं। उन्होंने अपने पिता के प्रण की रक्षा की है। सीता ने अपने पतिव्रत धर्म का पालन किया है और लक्ष्मण ने अपने सेवक धर्म का पालन किया है। इसी कारण से वे भी राम के साथ वन को गए हैं। पुनः हे भरत पुत्र! अब तुम भी अयोध्या नगरी का शासन करके अपने माता-पिता की आज्ञा का अनुसरण करो। यह सुनकर भरत को सान्त्वना प्राप्त हुई तत्पश्चात् वह पश्चाताप करते हुए कहने लगे।

जितना पाप माता-पिता अथवा पुत्र की हत्या करने से लगता है, विप्र नगर जलाता है, गौ हत्या करता है, तो उसे लगता है उतना ही पाप मुझे भी लगे। वेद बेचने, धर्म बेचने से जितना पाप लगता है उतना ही पाप मुझे भी लगे। भरत के इस प्रकार पश्चाताप करने को सुनकर माता कौशल्या कहती हैं कि-हे पुत्र! तुम और राम अभिन्न हो। यह तो विधाता का विधान है। इसी प्रकार समझाते-समझाते रात्रि व्यतीत हो जाती है और वशिष्ठ मुनि प्रवेश करते हैं।

मुनि समझाते हुए कहते हैं कि- हे पुत्र! राजा शोक करने योग्य नहीं है। वे महान् ज्ञानी, वेदों के ज्ञाता, सत्यव्रती, नीतिज्ञ, महाराज थे, जिनका यश चहुँलोक में प्रसिद्ध है। उनका यश ब्रह्मा, विष्णु, महेश भी गाते हैं। राजा ने सत्य की रक्षा के लिए अपने प्राण त्याग किए हैं और तुझे राज्य दिया है। अतः अब तुम्हें राज्य ग्रहण करके उनके प्रण की रक्षा करनी चाहिए। इस पर भरत जी विनय पूर्वक कहते हैं कृपया

यह बताइये-

१. मेरे पिता स्वर्ग में हैं और बड़े भाई श्री राम वन में हैं क्या राजगद्दी पर बैठना मुझे शोभा देगा?

२. मेरे विचार में मेरी रामचरण में रहने में ही भलाई है। मेरे जीवन का उद्देश्य माता सीता और श्री राम की सेवा करना ही है। वरना मेरा जीवन इसी प्रकार है जिस प्रकार ब्रह्मज्ञान के बिना वैराग्य।

३. आपको मुझसे मोह पैदा हो गया है। इसलिए ही मुझ कैकेयी के नीच, कुटिल व पापी पुत्र को राजगद्दी सौंप रहे हैं।

उपरोक्त विवेचन और उदाहरणों से भरत जी के त्याग, तपस्या, भ्रातृ-स्नेह और वैराग्य के साक्षात् दर्शन होते हैं तथा भरत जैसी तड़पन और त्याग भावना से ही श्री रामदर्शन हो सकते हैं।

मातु भरत के बचन मृदु सुनि पुनि उठी संभारि।
लिए उठाइ लगाइ उर लोचन मोचति बारि।।

इस प्रकार भरत जी के कोमल वचन सुनकर माता कौशल्या अपने को सम्भाल कर उठीं और भरत को उठाकर अपने हृदय से लगा लिया। जो भी अपने जीवन में भरत जी जैसा आचरण करेगा वह सदैव भगवान राम के हृदय में निवास करेगा और संसार में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करेगा।

इसीलिए इस युग में भी भरत के भ्रातृप्रेम के उदाहरण सर्वत्र विद्यमान हों, ऐसी अपेक्षा है।

- सुमित्रा मित्तल
१९ एल्गिन रोड, इलाहबाद (उत्तरप्रदेश)

नवलखा महल में नवनिर्मित ''आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा'' एवं सत्यार्थ प्रकाश स्तम्भ के बारे में दर्शकों के विचार

स्वामी जी के बारे में पूर्णरूप से जानकर आज मैं अपने आप को बहुत ही सौभाग्यशाली समझ रहा हूँ। स्वामी दयानन्द सचमुच दया के भण्डार थे, जिन्होंने अपने जीवन को सत्य की खोज और फिर लोगों को पाखण्ड मुक्त करने में लगा दिया। अपने अन्त समय में जिस तरह स्वयं को जहर देने वाले सेवक को ५००/- रुपये देकर नेपाल भेज देते हैं, इससे बढ़कर दयालु शायद ही इस ब्रह्माण्ड में हुए होंगे। स्वामी जी की बातों ने मन को छू लिया, और एक नई चेतना जाग्रत हुई है। जिससे उनके बारे में और जानने के लिए मैं आतुर हूँ। ऋषि को शत् शत् नमन्।

- विवेक कुमार तिवारी, कानपुर (उ. प्र.)

वेदों में इन्द्र-वृत्र युद्ध और वृष्टि विज्ञान

गतांक से आगे .....

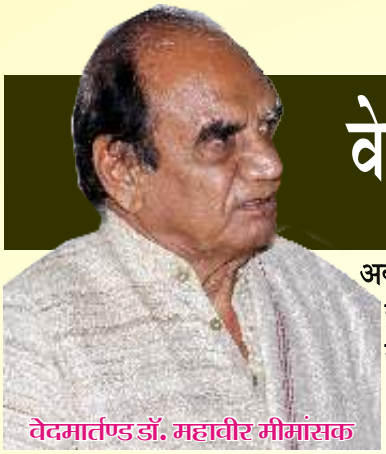
वेदमार्तण्ड डॉ. महावीर मीमांसक

अब इस इन्द्र वृत्र युद्ध में वृत्र अर्थात् मेघ कैसे मरता पिघलता है इसका स्पष्ट वर्णन अगले मंत्र में दिया है जो निम्न प्रकार है:-

दासपत्नीरहिगोपा अतिष्ठन्निरुध आपः पणिनेव गावः।
अपां बिलमपिहितं यदासीद् वृत्रं जघन्वाँ अप तद्ववार।।

ऋक् १.३२.११।

इस मंत्र में अहि शब्द भी है और वृत्र शब्द भी जो दोनों मेघ वाचक हैं, यह हम सप्रमाण बता चुके हैं।

बादल के रूप में गुप्त पानी से लबालब सराबोर घनघोर घटा तनी खड़ी है। पानी उसमें ऐसे जबरदस्ती रुका खड़ा है जैसे व्यापारी बनिया (गो आदि पशुओं को बेचने वाला) गौवों को जबरदस्ती घेरघार कर रखता है। मेघ से जल द्रवित होकर निकलने के छिद्र मानो रुके हुए हैं कि अचानक इन्द्र-वैद्युत् शक्ति के तड़ातड़ प्रहार बादल पर हुवे और बादल पानी के रूप में द्रवित होकर बह निकला। बादल इन्द्र शक्ति वैद्युत्-अग्नि के आघातों से विदीर्ण होकर पानी के रूप में परिणत हो गया और बरसने लगा, यही वृत्र का हनन या वध (वृत्रं जघन्वाँ) है जिससे पानी के बहने के रास्ते खुल गए और वह आकाश से भूमि पर वर्षा के रूप में धाराशायी गिरने लगा। यही पर्जन्य है जिसके लिए वेद में राष्ट्रगान किया गया है निकामेनिकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो नऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्।

हजारों वर्ष पूर्व यास्क के द्वारा इस वेद विज्ञान की प्रामाणिक व्याख्या करने के बाद भी मध्यकाल में यह विद्या लुप्त हो गई, जैसाकि सायण, महीधर आदि के वेदभाष्यों से स्पष्ट है। पश्चिमी विद्वानों ने भी उन्हीं से सम्बन्ध प्राप्त करके वेद विद्या को रसातल में पहुँचा दिया। ऋषि दयानन्द ने इस विज्ञान का पुनरुद्धार यास्क के आधार पर करने का बीड़ा उठाया, किन्तु पश्चिमी विद्वानों की दासता के शिकार आधुनिक भारतीय विद्वान् उसी 'अन्धेनैवनीयमाना यथाऽन्धः' की लकीर पर चल रहे हैं। इसका एक नमूना हम यहाँ प्रस्तुत करते हैं। जो वेद के इस विज्ञान से सर्वथा विपरीत, प्राचीनतम् प्रामाणिक व्याख्या से पराङ्मुख होकर इन्द्रादि वैदिक देवताओं का वह मिथकीय काल्पनिक इतिहास पेश करते हैं जो न केवल वास्तविकता से दूर का भी वास्ता नहीं रखता, अपितु इतिहासकारों की गर्हित मनोवृत्ति का भी परिचायक है और इतिहासकार लेखकों की भयंकर अनभिज्ञता पर आधरित है।

दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रो. डी.एन.झा ने १७ दिसम्बर २००१ के अंग्रेजी के हिन्दुस्तान टाइम्स में Paradox indian cow शीर्षक से एक लेख लिखा। इस लेख में वे इसी वैदिक देवता के सम्बन्ध में लिखते हैं:- "The vedic gods for whom the various sacrifices were performed had no fixed menu of food, milk, butter. Oxen, goats and sheep were offered to them and these were their usual food. though some of them seem to have had the special preferences."

"Indra had a special liking for bulls. Regveda. 5.29.7ab; 6.17.11b; 8.12.8ab; 10.27.2 c; 10.28.3c; 10.86.14ab."

यहाँ सर्वप्रथम तो प्रो. झा देवता शब्द का अनुवाद 'God' शब्द से करते हैं जो पूर्णतः उनकी अनभिज्ञता का परिचायक है। 'देवता' वर्णनीय विषय या शीर्षक होने से Subject-Matter या Heading होता है। यह हम यास्कीय परिभाषा देवता शब्द की देकर सिद्ध कर चुके हैं।

प्रो. झा इन्द्र की विशेष रुचि बैलों के खाने की लिखते हुवे जिन वेद मंत्रों के अंशों का हवाला देते हैं, उन्हें हम यहाँ उद्धृत कर रहे हैं-

सख सख्ये अपचत्तूयमग्निरस्य क्रत्वा महिषा त्री शतानि।। ऋग्वेद ५.२६.७।।
पचच्छतं महिषाँ इन्द्र तुभ्यम्। ऋग्वेद ६.१७.११।।
यदि प्रवृद्ध सत्पते सहस्रं महिषाँ अघः।। ऋग्वेद ८.१२.८।।
अमा ते तुम्रं वृषभं पचानि।। ऋग्वेद १०.२७.२।।
पचन्ति ते वृषभाँ अत्सि तेषां।। ऋग्वेद १०.२८.३।।
उक्षणो हि मे पञ्चदश साकं पचन्ति विंशतिम्।। ऋग्वेद १०.८६.१४।।

प्रो. झा की सबसे बड़ी भयंकर मूर्खता यह है कि वे न तो वैदिक भाषा को समझते हैं और न ही वेद की तकनीकी परिभाषिक शब्दावली के अर्थों को। इसलिए वे इन्द्र को कोई दैत्य आकार वाला महाकाय पुरुष-व्यक्ति-विशेष राक्षस

जैसा समझते हैं जो पशुओं की बलि यज्ञ में लेकर खाता है। इन्द्र शब्द की परिभाषा और स्वरूप हम पहले ही यास्क के निर्वचनों, वैदिक मंत्रों और उनकी हजारों वर्ष पुरानी प्रामाणिक व्याख्या के प्रमाणों के आधार पर बतला चुके हैं कि इन्द्र वैद्युत् अग्नि की प्राकृतिक शक्ति है जिसका कार्यभार और सामर्थ्य मेघ को विदीर्ण करके पानी के रूप में बून्द-बून्द द्रवित करके उसे वृष्टि उन्मुख करना है।

प्रो. झा द्वारा उद्धृत वेद के उपर्युक्त मन्त्रों में से तीन मन्त्रों में 'महिष' दो मंत्रों में 'वृषभ' और एक मंत्र में 'उक्षा' शब्द आया है। जिन सबका अर्थ प्रो. झा ने bulls किया है। जबकि लौकिक भाषा में 'महिष' का अर्थ भैंसा (सांड) और 'उक्षा' का अर्थ बैल होता है, प्रो. झा को तो लौकिक संस्कृत भाषा का भी ज्ञान नहीं, वैदिक भाषा की तो बात दूर रही। प्रो. झा अपने वैदिक ज्ञान का आधार म.म. उपाध्याय, पी.वी. काणे आदि को बतलाते हैं जिनका आधार पश्चिमी विद्वान् और सायण, महीधर आदि हैं जो अत्यन्त अर्वाचीन काल की विकृत और दूषित परम्पराओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। प्रो. झा जब इतिहास की खोज में जमीन और आसमान की परतें उधेड़ देते हैं तो वैदिक भाषा के शब्दों के वास्तविक अर्थ को जानने के लिए कम से कम निघण्टु और निरुक्त को ही देखने का कष्ट कर लेते। अब हम उनको निघण्टु और निरुक्त तक पहुँचाते हैं जिससे उन्हें वैदिक शब्दावली के प्रामाणिक अर्थों की जानकारी मिले।

'महिष' और 'उक्षा' शब्द निघण्टु में महानामों में पठित हैं जिनका अर्थ है महान् या विशाल (द्र. निघ ३.३)। वृषभ शब्द का अर्थ है मेघ या बादल जिसका निर्वचन पूर्वक अर्थ कहलाते हुवे यास्क निरुक्त में कहते हैं- **'वृषभो वर्षणात् मेघः इत्यर्थः'** अर्थात् वृषभ शब्द की व्युत्पत्ति बारिश अर्थ वाली वृष् धातु से है जिसका अर्थ है वर्षा करने वाला मेघ। पच् का अर्थ मांस का पकाना नहीं अपितु अन्तरिक्ष में सूर्य की अग्नि से समुद्र का पानी वाष्प बनकर जमा होते-होते जब मेघ के रूप में परिपक्व हो जाता है, उस वर्षा के लिए तैयार परिपक्व मेघ के लिए 'पच्' धातु का प्रयोग है। वर्षा ऋतु के दो मास अर्थात् साठ दिनों को छोड़कर साल के शेष दस मास अर्थात् तीन सौ दिन के लिए शतानि शब्द का प्रयोग है न कि तीन सौ पशुओं के लिए। पूरे दस मास=तीन सौ दिन तक अन्तरिक्ष में जलीय वाष्प अग्नि के द्वारा मेघ के रूप में बनती हुई परिपक्व होती रहती हैं, पकती रहती हैं, तैयार होती रहती हैं। महिष और उक्षा शब्द मेघ के विशेषण हैं। अर्थात् विशालकाय मेघ, महान् मेघ, न कि पशु विशेष के वाचक। अब उपर्युक्त मंत्रों का अर्थ स्पष्ट है। पहले मंत्र का अर्थ है इन्द्र अर्थात् वैद्युत् ऊर्जा का मित्र अग्नि ३०० दिन तक-१० मास तक समुद्र के पानी को बादल के रूप में पकाता रहता है, बनाता रहता है, तैयार करता रहता है। अगले माह में यह दिनों की संख्या १०० है जो ग्रीष्म ऋतु में कुछ दिन और जोड़कर बनती है। अर्थात् चैत्र, बैसाख और ज्येष्ठ इन तीन महीनों-१० दिन और मिलालो, ग्रीष्म ऋतु में अग्नि समुद्र के पानी को वाष्प के रूप में उड़ाकर अन्तरिक्ष में बादल तैयार करती रहती है, पकाती रहती है। कुछ मंत्रों में यह संख्या पूरे ९० दिन (नवति) भी दे रखी है। इस प्रकार परिपक्व होकर महान् बादल (विशालकाय घनघोर काले बादलों की घटा) अन्तरिक्ष में बनते हैं, पकते हैं, तैयार होते हैं। बादलों का रंग काला और सफेद होने से महिष और उक्षा से उपमा भी दी जा सकती है। किन्तु इन दोनों शब्दों का अपना अर्थ वेद में निघण्टु के अनुसार महान् या विशाल ही है, जो मेघ का विशेषण है। वर्षा ऋतु में तैयार परिपक्व महान् विशालकाय बादलों को इन्द्र वैद्युत् शक्ति विदीर्ण करके पानी के रूप में में द्रवित करके वृष्टि के रूप में जमीन पर गिराती है यही महान् मेघ का इन्द्र द्वारा खाना है। वेद के इन पारिभाषिक शब्दों की यह व्याख्या आज से हजारों वर्ष पूर्व दुर्गाचार्य ने निरुक्त में यास्क द्वारा निरुक्त वायु, वरुण, रुद्र, इन्द्र और पर्जन्य इन पाँच वैदिक देवताओं की व्याख्या के प्रसंग में लिखी है जो पाँचों देवता वह भौतिक शक्तियाँ हैं, जो अन्तरिक्ष में अपना कार्यभार पार करती हैं। दुर्गाचार्य लिखते हैं:-

वाय्वात्मनैव हि मध्यमः ऊर्जान्मासात् परतः? सार्वदिककमुदकमुपसंहरन्नोषधिवनस्पति जलाशयेभ्यः उदकमन्तरिक्षलोकस्य गर्भमुपचिनोति। स मासाष्टकेन सम्भृतोदकगर्भोविपक्वःप्रावृष प्राप्य प्रसवाय कल्पते। ..... ए एष सम्भृतोदकगर्भो वायु र्विवृण्वन् मेघजालेन नभः मध्यमो वरुण सम्पद्यते ततो रुदत् रुद्रः तत इरां दरत् इन्द्रः ततो रसान् प्रार्जयत् पर्जन्यः। दुर्गाचार्य निरु. १०.१।।

इन्द्र देवता और वैदिक शब्दावली की इतनी स्पष्ट वैज्ञानिक

व्याख्या के मूल स्रोत तक पहुँचे बिना इतिहास का प्रोफेसर क्या इतिहास की खोज करेगा? ८ जनवरी २००२ के इसी समाचार पत्र में डॉ. संध्या जैन ने 'cow as mother' शीर्षक से लेख में यह तो ठीक ही लिखा कि गाय अर्थ वाला कोई भी शब्द इन मंत्रों में नहीं है। किन्तु महिष, उक्षा और वृषभ का अर्थ क्रमशः buffaloes, large bulls और bulls करके उन्होंने भी वेदार्थ विज्ञान में अपनी कुण्ठित बुद्धि को दिखला दिया।

इन प्रामाणिक विवरणों से निष्कर्ष निकलता है कि यास्क वेद में इतिहास नहीं मानते। वैदिक इन्द्र देवता कोई ऐतिहासिक व्यक्ति विशेष नहीं अपितु भौतिक-शक्ति है, जो मेघ को विदीर्ण करके जल के रूप में द्रवित करती है जिससे वृष्टि होती है। वृत्र कोई ऐतिहासिक व्यक्ति विशेष (राक्षस) नहीं अपितु मेघ का वाचक है। इन्द्र-वृत्र-युद्ध कोई ऐतिहासिक घटना नहीं, अपितु अन्तरिक्ष में मेघ और वैद्युत् ऊर्जा-भौतिक शक्ति के बीच होने वाला संघर्ष है और वृत्र-वध भी कोई ऐतिहासिक घटना नहीं अपितु मेघ का जल के रूप में विदीर्ण होना और वृष्टि के रूप में बरसना जो वस्तुतः वृष्टि विज्ञान है उसका वध है। यह वर्णन उपमा के रूप में वेद में है। जो वस्तुतः वृष्टि विज्ञान है। प्रामाणिक स्रोतों और मौलिक सूत्रों के आधार पर वैदिक भाषा की शब्दावली का अर्थ खोजकर वैदिक ज्ञान-विज्ञान को उजागर करने की आज के युग में महती आवश्यकता है। ताकि भारत देश गौरवान्वित और समूचा विश्व लाभान्वित हो सके।

वैदिक शोध सदन,
ए-३/११, पश्चिम विहार, नई दिल्ली- ११००६३

श्री भवानीदास जी आर्य को सम्मानित किया गया

पुस्तक प्रकाशन एवं वितरण के क्षेत्र में गत ५० वर्षों से निरन्तर प्रगति के सोपानों को तय करते हुए नए मापदण्डों को स्थापित करने वाले कर्मठ, मृदुभाषी, पुरुषार्थी, सत्यव्रती श्री भवानीदास आर्य (मन्त्री- श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर) को उनकी दीर्घकालीन सेवाओं को देखते हुए Federation of Publishers and book seller's association in India (FPBAI) ने दिनांक २४-१२-२०१४ को दिल्ली के Le-Meridien होटल में आयोजित एक समारोह में उन्हें **'विशिष्ट पदक'** से सम्मानित किया। इस अवसर पर न्यास परिवार की ओर से हार्दिक बधाई के साथ परमपिता परमात्मा से यह प्रार्थना भी है कि आपका प्रतिष्ठान **ARYA'S PUBLISHERS & DISTRIBUTORS PVT. LTD.** दिनों दिन उन्नति करे।

- अशोक आर्य

सत्यार्थप्रकाश पहेली-१४

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। (द्वितीय समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

१		ज्ज	१		२		थ्या		३		ष्टा	३		३	री
४	कृ		४	घ्न	४				५	अ		५		५	त	
६		द्या			७		चे		८		पा	८		८	ना	

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. किनका संग करना चाहिए?
२. मारण, मोहन, उच्चाटन आदि कैसी बात हैं?
३. कैसे मनुष्यों पर विश्वास न करना चाहिए?
४. किसी के किए हुए उपकार को न मानना क्या कहलाता है?
५. कैसे जलाशय में स्नान न करें?
६. अपने सन्तानों को किस चीज की प्राप्ति न कराने वाले माता पिता सन्तानों के शत्रु होते है?
७. चलते समय दृष्टि कहाँ रखें?
८. परमेश्वर को मानके उसकी क्या करे?

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- १३ का सही उत्तर

१. तीन, २. माता, ३. उत्तम, ४. दुग्ध, ५. शुद्ध, ६. गुणकारक, ७. राजा, ८. मादकद्रव्य, ९. पाँच

सहायक ग्रन्थ- सत्यार्थप्रकाश, पुरस्कार- "अनूठी, अद्भुत पत्रिका सत्यार्थ सौरभ" एक वर्ष तक निःशुल्क, घर बैठे प्राप्त करें।
कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ अप्रैल २०१५

श्रीमद् दयानन्द जयन्ती पर विशेष

स्वामी दयानन्द सर्वप्रथम हैं।

गतांक से आगे .....

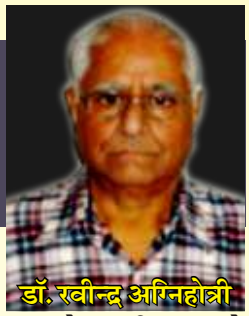

डॉ. रवीन्द्र अग्निहोत्री

विज्ञान के समर्थक-

महर्षि दयानन्द इस दृष्टि से भी सर्वप्रथम हैं कि जब हमारे ही नहीं, तथाकथित प्रगतिशील- आधुनिक यूरोप के धर्माचार्य भी धर्म और विज्ञान को परस्पर विरोधी मानकर विज्ञान एवं शिल्प का विरोध कर रहे थे, तब दयानन्द ने विज्ञान का स्वागत किया। उन्होंने महर्षि कणाद की बताई धर्म की परिभाषा

'यतोभ्युदय निःश्रेयस सिद्धि स धर्मः।' (वैशेषिक दर्शन, १.१.२)

पर बल देते हुए विज्ञान को अभ्युदय (भौतिक समृद्धि) के लिए आवश्यक माना। वे चाहते थे कि वेदों में निहित सूत्रों के आधार पर आधुनिक युग में भी वैज्ञानिक खोजें की जायँ। यूरोपीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी (टेक्नालॉजी) का लाभ उठाने के लिए अपने अंतिम दिनों में उन्होंने योजना बनाई कि भारत के प्रभावशाली विद्यार्थियों को जर्मनी भेजा जाए क्योंकि जर्मनी तब विज्ञान के क्षेत्र में अग्रणी माना जाता था। प्रो. वाइज से हुआ उनका पत्र व्यवहार इसका प्रमाण है।

ज्ञातव्य है कि महर्षि दयानन्द के इन्हीं विचारों से प्रेरित होकर कई विद्वानों ने वैदिक साहित्य के आधार पर अपने बलबूते अनुसंधान करके दयानन्द के मत को पुष्ट किया और वेदों की गरिमा बढ़ाई, जैसे शिवकर बापूजी तलपड़े (१८६४-१९१६) ने अमरीका के राइट ब्रदर्स से आठ वर्ष पहले १८९५ में अपना पूर्णतया भारतीय विमान मरुत्सखा बनाकर मुम्बई में चौपाटी पर १५०० फुट की ऊँचाई तक उड़ाकर दिखा भी दिया। इसी प्रकार जिस यज्ञ (हवन) को लोगों ने पूजा का एक कर्मकाण्ड बना लिया था, महर्षि दयानन्द ने बताया कि उसे यदि वैज्ञानिक ढंग से सम्पन्न किया जाए तो वह रोगनाशक, वर्षाकारक, वायु शुद्धिकारक है। उनके इस विचार को प्रमाणित करके दिखाया १९३० के दशक में डॉ. फुन्दनलाल एम.डी. लंदन ने उस समय असाध्य कहे जाने वाले टी.बी. जैसे रोग की सफल चिकित्सा करके और १९६० में पं. वीरसेन वेदश्रमी ने सूखे की स्थिति में अनेक स्थानों पर कृत्रिम वर्षा कराकर। यह दयानन्द की शिक्षाओं का ही परिणाम है कि आज कृषि में वायरस प्रदूषण को रोकने के लिए मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, जयपुर में परमाणु रेडियो एक्टिव पदार्थों से निकलने वाले विकिरणों के प्रभाव को रोकने में सक्षम कवच निर्माण के लिए भौतिक विज्ञान विभाग, जयपुर विश्वविद्यालय जैसी संस्थाओं में यज्ञ के प्रभाव का अध्ययन किया जा रहा है।

धार्मिक एकता के पुजारी

उस युग में स्वामी दयानन्द प्रथम महापुरुष थे जिन्होंने धार्मिक एकता स्थापित करने का प्रयास किया। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका में स्पष्ट शब्दों में कहा कि जैसे मैं मनुष्य जाति की उन्नति के लिए पुराणों, बौद्धों-जैनियों के ग्रन्थों, बाइबिल और कुरान को प्रथम ही बुरी दृष्टि से न देखकर उनमें से गुणों का ग्रहण और दोषों का त्याग करता हूँ वैसे ही सबको करना उचित है। स्वामी दयानन्द ऐसे पहले महापुरुष थे जिन्होंने प्रत्येक धर्म/मनुष्य को समान महत्व देते हुए कहा कि सब लोगों को सबकी मत विषयक पुस्तकों को पढ़ना चाहिए और फिर अपने विवेकानुसार निश्चय करना चाहिए। यह विवेक ज्ञान प्राप्त करने और उसका अभ्यास करने से विकसित होता है, अतः प्रत्येक मनुष्य को ज्ञानार्जन का प्रयास हमेशा करते रहना चाहिए और सत्य को ग्रहण करने एवं असत्य को त्यागने के लिए सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

धार्मिक एकता स्थापित करने के लिए उन्होंने व्याख्यान/लेखन द्वारा तो प्रयास किए ही, विभिन्न धर्मों के धर्माचार्यों को एक मंच पर इकट्ठा करके भी प्रयास किए ताकि सब मिलकर तर्कहीन, अवैज्ञानिक, अन्धविश्वास पर आधारित, संकीर्णता फैलाने वाले, भेदभाव उत्पन्न करके समाज की समरसता को बिगाड़ने वाले साम्प्रदायिक

सिद्धान्तों को छोड़कर ऐसे सिद्धान्त स्वीकार कर लें जो सर्वमान्य हों और फिर सब धर्माचार्य केवल उन्हीं सिद्धान्तों का प्रचार करें। इसके लिए उन्होंने दो बार संगोष्ठियाँ भी आयोजित कीं। उनके इन प्रयासों की गंभीरता के प्रति विधर्मियों तक में कितना विश्वास था, उसका कुछ अनुमान इस तथ्य से लगाया जा सकता है कि इन संगोष्ठियों में भाग लेने वाले आचार्य केशवचन्द्र सेन, डॉ. टी.जे. स्कॉट, पादरी नोबेल, दारुल उलूम, देवबंद के संस्थापक मौलवी मोहम्मद कासिम, सर सैयद अहमद खाँ जैसे तत्कालीन प्रबुद्ध लोग भी पहुँचे। इस विश्वास का ही परिणाम था कि १८७५ में देश की पहली आर्य समाज की स्थापना काकड़वाड़ी, मुम्बई में एक पारसी सज्जन के बाग में हुई जिनका नाम था डॉ. माणेक जी अदेरजी। अन्य भी अनेक स्थानों पर आर्य समाज की स्थापना मुसलमानों के घरों पर हुई, जैसे लाहौर में खान बहादुर डॉ. रहीम खान, अमृतसर में मियाँ मोहम्मद जान आदि। अनेक जैनियों और सिखों ने स्वामी जी के बताए आदर्शों को अपनाया। सरदार भगत सिंह के दादा सरदार अर्जुन सिंह जी ऐसे ही सिख थे। महर्षि दयानन्द की प्रेरणा से उनका परिवार स्वतंत्रता सैनानी बना, और सिख पंथ के अनुयायी रहते हुए भी भगत सिंह का उपनयन (जनेऊ) संस्कार कराया गया। स्वामी दयानन्द के प्रति विश्वास का ही यह परिणाम था कि १९३८ में जब काकड़वाड़ी, मुम्बई आर्य समाज में एक हॉल बनाने का निश्चय किया गया तो महर्षि दयानन्द के धार्मिक एकता के प्रयासों की प्रशंसा करते हुए सर्वाधिक दान (पाँच हजार रु.) दिया मुम्बई के हाजी अल्लारखिया रहमतुल्ला सोनावाला ने। उस युग में जब विभिन्न समाज सुधारक अपने-अपने पंथ स्थापित करते जा रहे थे, स्वामी दयानन्द ने धार्मिक एकता को घोषित करते हुए कोई नया पंथ नहीं बनाया। आर्य समाज नामक संस्था श्रद्धालुओं के आग्रह पर स्थापित की गई। स्वामी दयानन्द ने उसका अधिष्ठाता/अध्यक्ष आदि कोई पद स्वीकार नहीं किया, न अपना नाम उसमें जोड़ा। उन्होंने स्पष्ट घोषणा की कि मेरा लेशमात्र भी उद्देश्य कोई नवीन मत चलाने का नहीं है। मैं तो उन्हीं वेदादि सत्यशास्त्रों का और ब्रह्मा से लेकर जैमिनी पर्यन्त ऋषि मुनियों की मान्यताओं का प्रचार करना चाहता हूँ जिनके आधार पर मानव मात्र का धर्म सदा से चलता रहा है और इसीलिए इसे सनातन धर्म कहते हैं। हिन्दू समाज के धर्माचार्य दीर्घकाल से 'सनातन धर्म' शब्द का प्रयोग करते आ रहे हैं और दुहाई इन्हीं वेदों, शास्त्रों आदि की देते आ रहे हैं जबकि वास्तविकता यह है कि उनके द्वारा प्रतिपादित आधुनिक हिन्दू धर्म अधिकांशतः एक पौराणिक धर्म है जिसका उद्गम बौद्ध काल के पश्चात् हुआ (स्वामी विवेकानन्द भारतीय नारी पृष्ठ ६२)।' वह कहानी आपने सुनी होगी कि हुक्के की चिलम बदल गई, फर्शी बदल गई, नैचा बदल गया, फिर भी कहते रहे कि हुक्का बहुत पुराना है। पिछले काफी समय से हिन्दू धर्म की भी यही स्थिति चली आ रही है। धर्म ग्रन्थ बदल गए (वेद एवं अन्य शास्त्रों को हटाकर श्रीमद्भागवद्, रामचरित मानस आदि प्रतिष्ठित हो गए), एक ईश्वर के स्थान पर अनेक देवी देवता आ गए, चित्त को एकाग्र करने वाली उपासना का स्थान घंटा घड़ियाल बजाने वाली पूजा ने ले लिया, कर्मणा वर्णव्यवस्था की जगह जन्मना जातिप्रथा को हमने अपनी पहचान बना लिया, फिर भी हम कहते हैं कि हम सनातन धर्म के अनुयायी हैं। स्वामी दयानन्द सबसे पहले महापुरुष थे जिन्होंने हमारे धर्म के मूल से हमें परिचित कराया, मूल धर्मग्रन्थों पर छाई धुंध को साफ करके उनका वास्तविक स्वरूप दिखलाया और समाज में घुसपैठ करके उसे घुन की तरह खोखला करने वाली कुरीतियों को दूर करने की प्रेरणा दी।

सदस्य, हिन्दी सलाहकार समिति, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार
१३८ एए आई जी, पल्लवपुरम फेज़- 2, मेरठ-२५०११०

सत्यार्थ प्रकाश पहेली - ११ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली के संदर्भ में हमें उत्साहजनक प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हो रही हैं। **सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ११** के चयनित १० विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- श्री राम गोरधनदास परयानी अहमदाबाद (गुज.), श्रीमती महिन्द्र वधवा अम्बालाशहर (हरि.), श्री मांगी लाल आर्य, नीमच (म. प्र.), श्री गौरव कुमार, कुडवार (उ. प्र.), श्री गुमान सिंह आर्य कोटा (राज.), श्री कुमार अविनाश सिंह, मुजफ्फरपुर (बिहार), श्री कुन्दन कुमार सिंह, मुजफ्फरपुर (बिहार), श्री कन्हैया लाल, विजयनगर (राज.), श्री जगदीश प्रसाद, विजयनगर (राज.), श्री धर्मेन्द्र भादाणी (बीकानेर)। इनको स्वयं को अथवा इनके द्वारा नामित भाई/बहिन को १ वर्ष तक सत्यार्थ सौरभ पत्रिका निःशुल्क भेजी जावेगी।

गलत कार्य से बचना ही नहीं, उसको रोकना भी हमारा दायित्व है

सीताराम गुप्ता

एक सरकारी विद्यालय की एक कक्षा में दो-दो विद्यार्थियों के लिए बैठने वाले डेस्कों पर तीन-तीन, चार-चार विद्यार्थी बैठे थे। कमरे छोटे, डेस्क कम और बच्चे ज्यादा। बच्चे डेस्क तोड़ते भी कुछ ज्यादा ही हैं इसलिए कितने भी डेस्क मंगवा लो डेस्क हमेशा कम ही बने रहते हैं। एक विद्यार्थी ने अध्यापिका से कहा कि मैम बैठने में बड़ी दिक्कत हो रही है। अध्यापिका ने कहा कि यदि डेस्क तोड़ोगे तो यही हाल होगा। रोज-रोज नए डेस्क नहीं खरीदे जा सकते। हम यदि मिलने वाली सुविधाओं अथवा वस्तुओं को नष्ट करते रहेंगे तो उसका खामियाजा भी किसी न किसी रूप में हमें ही भुगतना पड़ेगा दूसरों को नहीं।

हम जैसे बीज बोते हैं वैसी ही फसल काटते हैं। यदि डेस्क तोड़ेंगे तो बैठने में दिक्कत होगी ही। जमीन पर भी बैठना पड़ सकता है। बिजली खराब करेंगे या बल्ब व ट्यूब तोड़ेंगे तो अँधेरे में पढ़ाई करनी पड़ेगी। कुछ लोग सार्वजनिक संपत्ति का

न केवल दुरुपयोग करते हैं अपितु उसे नष्ट करने या चुराने से भी बाज नहीं आते। ऐसे में व्यवस्था पर दोषारोपण करना बेमानी है। हमें सार्वजनिक संपत्ति की देखभाल अपनी निजी संपत्ति की तरह करनी चाहिए तभी हम उससे लाभान्वित हो सकेंगे।

इतने में एक दूसरा विद्यार्थी खड़ा हो गया और अध्यापिका से बोला 'मैम मैं कभी डेस्क, बल्ब या ट्यूब नहीं तोड़ता और न ही कभी सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान पहुँचाता हूँ फिर भी मुझे और मेरे जैसे दूसरे विद्यार्थियों को क्यों इन सबका खामियाजा भुगतना पड़ रहा है?' अध्यापिका ने बतलाया कि मनुष्य कर्मशील प्राणी है। वह कर्म किए बिना रह ही नहीं सकता। वह जैसा कर्म करता है उसे वैसा ही फल मिलता है। जब हम गलत कार्य करते हैं तो उसका गलत नतीजा भी हमें अब यहीं भुगतना पड़ता है। इसलिए कहा गया है कि अच्छे कार्य करो। उसका परिणाम सुखद होगा। लेकिन कुछ लोग कार्य करते ही नहीं। माना कि वे गलत कार्य नहीं करते इसलिए गलत परिणामों से बच तो जाते हैं लेकिन अच्छे कार्य न करने के कारण अच्छाई अथवा सुविधाओं से वंचित अवश्य रह जाते हैं।

गलत कार्य न करना अथवा कार्य ही न करना पर्याप्त व उचित नहीं। हमें अच्छे अथवा जरूरी कार्य भी अवश्य ही करने पड़ेंगे तभी बात बनेगी। जब कोई विद्यार्थी कक्षा में डेस्क अथवा अन्य सामान तोड़ रहा है तो अच्छे विद्यार्थियों का दायित्व व कर्तव्य है कि वे उस तोड़-फोड़ अथवा विध्वंस को रोकने का प्रयास करें। स्वयं नहीं रोक सकते तो उसकी शिकायत करके उसे रुकवाएँ। गलत काम को स्वयं न करना व अन्य लोगों को भी गलत कार्य न करने देना ही सही कार्य है। हम गलत कार्य नहीं करते लेकिन गलत कार्य करने वाले लोगों का विरोध नहीं करते तो भी हम सचमुच एक बहुत बड़ा गलत कार्य कर रहे हैं और इसी गलती का खामियाजा हमें भुगतना पड़ता है। समाज को बुरे लोग इतना नुकसान नहीं पहुँचाते जितना अच्छे लोग पहुँचाते हैं जब वे तटस्थ अथवा निष्क्रिय होकर बैठे रहते हैं और सही कार्य नहीं करते।

- ए.डी.-१०६-सी, पीतमपुरा,
दिल्ली-११००३४

समाचार

दयानन्द ने अपने विचारों से दुनिया को दी नई दिशा

शहर की समस्त आर्य समाजों द्वारा आर्य समाज, रामपुरा में सामूहिक रूप से महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्मदिवस उल्लासपूर्वक मनाया गया। महर्षि दयानन्द वेद प्रचार समिति के अध्यक्ष अरविन्द पाण्डेय ने आने वाले समय में आर्य समाज की भावी रूपरेखा पर प्रकाश डाला तथा कहा कि त्याग व क्षमा की साक्षात् मूर्ति थे महर्षि दयानन्द सरस्वती। हमें भी उनके मार्ग का अनुसरण करना चाहिए।

आर्य समाज जिला सभा के प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने उपस्थित सभी जनों को आर्य समाज के साथ मिलकर समाजहित के कार्य करने हेतु आह्वान किया। कार्यक्रम का संचालन वेद प्रचार समिति के संगठन सचिव चन्द्रमोहन कुशवाह ने किया। - अरविन्द पाण्डेय, कार्यालय सचिव

अमर बलिदानी लाला लाजपतराय का जन्मदिन मनाया

एम. एस. सैण्ट्रल सीनियर सैकेण्ड्री स्कूल, कोटा में आयोजित इस कार्यक्रम के मुख्य वक्ता रामप्रसाद याज्ञिक ने लाला लाजपतराय के जीवन पर प्रकाश डाला तथा उनके जीवन में महर्षि दयानन्द एवं आर्य समाज के प्रभाव से जो क्रान्ति पैदा हुई उसकी भी जानकारी दी।

विद्यालय के प्रभारी संदीप सक्सेना ने अतिथियों का आभार व्यक्त किया। - अर्जुनदेव चढ्ढा

शर्मा वानप्रस्थ की दीक्षा ले बने श्याम मुनि

श्री श्याम शर्मा ने १८ जनवरी २०१५ को फलोदी से पाँच किलोमीटर दूर वैदिक न्यास, गुरुकुल में दर्शनाचार्य स्वामी सत्यानन्द से वानप्रस्थ की दीक्षा ली। मुनि १९७२ में आर्य समाज से जुड़े थे। वे राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा में आर्य समाज बाड़मेर के प्रतिनिधि भी रहे। वर्तमान में वे आर्य समाज के मंत्री पद पर हैं। - सुभाष शर्मा, आर्यसमाज, बाड़मेर

सामवेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न

श्री रामकृष्ण मन्दिर, कुन्हाड़ी के विशाल प्रांगण में दिनांक १० जनवरी से १४ जनवरी तक प्रातः ८:३० बजे से ११:३० बजे तक सामवेद पारायण महायज्ञ का आयोजन आर्य समाज, कुन्हाड़ी द्वारा किया गया। इस यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य पं. शिवदत्त जी पाण्डेय थे। इस अवसर पर दिल्ली से आए भजनोपदेशक श्री दिनेश दत्त आर्य ने भी अपने भजनों के माध्यम से श्रोताओं को उपदेश दिए। इस अवसर पर आर्य समाज, कुन्हाड़ी के प्रधान श्री पी.सी मित्तल ने पूर्णाहुति के दिन उपस्थित सभी श्रद्धालुओं का आभार प्रकट किया। इस महायज्ञ में आर्य समाज, तलवण्डी (कोटा) के श्री हनुमान प्रसाद आर्य, भीमगंज के प्रधान श्री शिव कुमार त्यागी, मंत्री श्री धीरेन्द्र गुप्ता, आर्य समाज, अंजलि विहार के प्रधान श्री राजेन्द्र आर्य, आर्य परिवार संस्था के प्रधान श्री प्रेमनाथ कौशल आदि आर्यजन उपस्थित थे। - डी.पी. मिश्रा

आर्य समाज त्रिनगर, दिल्ली की कार्यकारिणी के चुनाव समपन्न

आर्य समाज महर्षि दयानन्द पार्क नारंग कॉलोनी, कन्हैया नगर, त्रिनगर, दिल्ली-३५ की कार्यकारिणी का चुनाव सर्वसम्मति से १२-२-१५ को सम्पन्न हुए, जिसमें संरक्षक- आर्य राजेन्द्र जी, प्रधान- आर्य रामनारायण मित्तल जी, मन्त्री- आर्य राधेश्याम जी, कोषाध्यक्ष- आर्य प्रदीप जी निर्वाचित हुए। सभी पदाधिकारियों को सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

गुरुकुल हरिपुर का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

गुरुकुल हरिपुर, जुनानी का पंचम चतुर्वेद पारायण महायज्ञ एवं वार्षिकोत्सव अनेक सन्तों, विद्वद्जनों के सानिध्य में व सहस्रों नर-नारियों की उपस्थिति में दिनांक ३० जनवरी से १ फरवरी २०१५ में निर्विघ्न सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का उद्घाटन गुरुकुल के यशस्वी प्रधान श्री जयदेव आर्य 'राजकोट' के करकमलों द्वारा ध्वजारोहण से आरम्भ हुआ। इस अवसर पर पूज्य स्वामी धर्मानन्द सरस्वती, स्वामी अमृतानन्द सरस्वती, डॉ. शिवदत्त पाण्डेय, आचार्य अंशुदेव, श्री खुशहाल चन्द आर्य, आचार्य राहुलदेव तथा डॉ.कैलाश चन्द्र शास्त्री उपस्थित थे। गुरुकुल के कुलपिता श्री सुरेश चुग एवं माता श्रीमती विजयलक्ष्मी चुग की इस कार्यक्रम में विशेष प्रेरणा रहे।

- डॉ.सुदर्शन देव आचार्य

आर्य समाज, हिरणमगरी, उदयपुर द्वारा बोधोत्सव मनाया गया

आर्य समाज, हिरणमगरी के तत्वावधान में ऋषि बोधोत्सव का कार्यक्रम

उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ। प्रातः प्रभातफेरी का आयोजन डॉ. अमृतलाल तापड़िया के संयोजकत्व में हुआ। इस अवसर पर श्री अशोक आर्य (कार्यकारी अध्यक्ष श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर) व बयाना से पधारे उपदेशक डॉ. जितेन्द्र कुमार ने प्रेरक उद्बोधन प्रदान किए। श्री इन्द्रदेव पीयूष द्वारा मधुर भजन प्रस्तुत किए गए। यज्ञ में श्री अनन्त देव शर्मा, श्री इन्द्र कुमार ममतानी व श्री महेश दीक्षित यजमान बने। आर्य समाज के प्रधान श्री भँवर लाल आर्य, श्री के.के.सोनी, प्रेमनारायण जायसवाल ने अतिथियों का स्वागत किया। अन्त में श्रीमती शारदा गुप्ता ने सभी का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन श्री रामदयाल मेहरा ने किया।

आर्ष कन्या गुरुकुल, भुसावर, भरतपुर में प्रवेश प्रारम्भ

गुरुकुल में आर्ष पाठविधि तथा राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की पाठविधि से पठन-पाठन की व्यवस्था है। ३१ मार्च २०१५ से कक्षा ४, ५ व ६ में प्रवेश आरम्भ हो रहा है। इस वर्ष केवल ३० छात्राओं को प्रवेश दिया जायेगा। आप अपनी सुपुत्री के उज्ज्वल भविष्य तथा सुसंस्कारों के लिए कन्या गुरुकुल में प्रवेश करायें।

- कुमारी ख्याति शास्त्री, सामवेदा

महर्षि दयानन्द सरस्वती जयन्ती आयोजित की गई

राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा, जयपुर द्वारा १५ फरवरी २०१५ को प्रातःकाल महर्षि दयानन्द जयन्ती का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि सीकर के सांसद पूज्य स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती एवं विशिष्ठ अतिथि श्री एम.एल.गोयल, क्षेत्रीय निदेशक डी.ए.वी राजस्थान थे। यज्ञ के ब्रह्मा प्रख्यात् वैदिक विद्वान् डॉ. रामपाल विद्याभास्कर थे। प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री विजय सिंह भाटी के नेतृत्व में सम्पूर्ण कार्यक्रम बड़े ही श्रद्धोपेत वातावरण में सम्पन्न हुआ।

- डॉ. सुधीर शर्मा, मंत्री

हलचल

अब बैलून से मिल सकेगी इण्टरनेट सेवा

अगर आपको आने वाले कुछ दिनों में भारतीय आसमान में गूगल के बैलून उड़ते हुए नजर आयें तो चौंकियेगा नहीं क्योंकि ये कोई आम

बैलून नहीं होंगे। इनके जरिए दूर-दराज के इलाकों में इण्टरनेट सर्विस मुहैया करायी जाएगी। अमेरिकी अखबार 'द वॉल स्ट्रीट जर्नल' की रिपोर्ट के मुताबिक कैलीफोर्निया की इण्टरनेट कम्पनी गूगल साझेदारी के लिए दुनियाभर की टेलीकम्युनिकेशन कम्पनियों से बातचीत कर रही है। जिसमें कई भारतीय कम्पनियाँ भी शामिल हैं।

इस प्रोजेक्ट में आकाश में कई बैलून छोड़े जायेंगे। जो एक राउटर की तरह काम करेगा। और इनके जरिये ऐसे इलाकों में इण्टरनेट सर्विस पहुँचायी जायेगी, जहाँ यह सर्विस पहुँचाना मुश्किल है। ये बैलून धरती से ६० हजार फुट की ऊँचाई पर वायुमण्डल में तैरेंगे और इन पर किसी भी प्राकृतिक आपदाओं का कोई असर नहीं पड़ेगा। यह सेवा २०१६ से शुरू हो सकती है। ये सर्विस टॉवर खड़ी करने वाले मॉडल के मुकाबले सस्ती होगी।

दयानन्द ने तैरना सिखाया

आर्य समाज, हिरणमगरी, उदयपुर के तत्वावधान में दयानन्द जयन्ती के अवसर पर बोलते हुए कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ. अमृतलाल तापड़िया ने कहा कि महर्षि दयानन्द गुरुओं के भी गुरु थे, स्वतंत्रता आन्दोलन के प्रणेता थे तथा कुरीतियों को दूर करने के संदर्भ में ऋषि दयानन्द अग्रणी थे। कार्यक्रम का संचालन रामदयाल मेहरा ने करते हुए कहा कि अनेकानेक महापुरुष ऐसे हुए हैं जिन्होंने हमें डूबने से बचाया है किन्तु महर्षि दयानन्द ने तैरना सिखाया है। - रामदयाल प्रचार मंत्री

श्री सत्यनारायण तोलम्बिया सम्मानित

आर्य समाज, शाहपुरा के मंत्री श्री सत्यनारायण जी द्वारा किए गए

सामाजिक कार्यों एवं विशेष रूप से पारिवारिक यज्ञों के माध्यम से शुद्धि तथा पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए गणतंत्र दिवस समारोह २०१५ में उन्हें सम्मानित किया गया। श्री सत्यनारायण जी को न्यास व सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से बधाई

गुरुकुल आश्रम आमसेना का ४८ वाँ वार्षिक महोत्सव सम्पन्न

दिनांक ७ से ६ फरवरी २०१५ में उक्त वार्षिकोत्सव पूज्य स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी विशुद्धानन्द जी, स्वामी सुमेधानन्द जी, श्री प्रवेश वर्मा जी, डॉ. पूर्ण सिंह जी डबास, श्री अरुण अब्रोल और डॉ. सोमदेव जी शास्त्री व अन्य अनेकों गणमान्य आर्यों के सानिध्य में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर ब्रह्मपारायण ऋग्वेद महायज्ञ, पंडित विशिकेशन शास्त्री के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर ८० साल से अधिक की आयु प्राप्त करने वाले सेवानिवृत्त बुजुर्गों को सम्मानित किया गया।

साध्वी डॉ. उत्तमा यति सम्मानित

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल की प्रधान संचालिका साध्वी डॉ. उत्तमा

यति जी को सान्ताक्रुज आर्य समाज के ७१ वें वार्षिकोत्सव पर २५ जनवरी २०१५ को 'श्रीमती लीलावन्ती महाशय आर्य महिला पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। निश्चय ही साध्वी जी आर्य जगत् की जो सेवा कर रही हैं, वे इस सम्मान के योग्य हैं। सत्यार्थ सौरभ व न्यास परिवार साध्वी जी के निरामय दीर्घायुष्य की प्रार्थना करते हुए उनके प्रति हार्दिक शुभकामनाएँ प्रकाशित करते हैं।

- मृदुला चौहान

स्वामी दयानन्द सरस्वती का जन्म दिवस मनाया गया

आर्य कन्या विद्यालय समिति एवं श्रीरामजी लाल आर्य कन्या छात्रावास समिति द्वारा अलवर की समस्त आर्य समाजों एवं प्रबुद्ध नागरिकों के सहयोग से स्वामी जी का १९१ वाँ जन्म दिवस मनाया गया। इस अवसर पर विशाल एवं भव्य शोभायात्रा का आयोजन किया गया जिसमें भिन्न भिन्न प्रकार की अनेक आकर्षक झांकियाँ प्रस्तुत की गईं।

वार्षिक निर्वाचन

आर्य समाज, मानसरोवर के वार्षिक चुनाव डॉ. रामपाल विद्याभास्कर के निर्देशन में निम्न प्रकार सम्पन्न हुए। अध्यक्ष श्री अर्जुनेदव कालरा, उपप्रधान श्री ईश्वर दयाल माथुर, विनोद मेहरा, मंत्री श्री सुरेश साहनी। सभी अधिकारियों को हार्दिक बधाई।

डॉ.ब.द. धवन को सम्मानित किया गया

पंजाब राज्य के राजस्व विभाग की सेवा से निवृत्त होकर संस्कृत का अध्ययन कर वैदिक साहित्य में पी.एच.डी. प्राप्त करने वाले एवं वेदाध्ययन में अपने आपको सम्पूर्ण रूप से समर्पित कर देने वाले डॉ. धवन जी को आर्य समाज सेक्टर ६, पंचकूला द्वारा सम्मानित किया गया। डॉ.धवन ने अनेक स्तरीय व्याख्यान शृंखलाएँ प्रस्तुत करते हुए अंग्रेजी में अध्यात्म तथा वैदिक संस्कृति को समर्पित कई पुस्तकें लिखी हैं। इनको इनकी पुस्तकों के आधार पर ब्रिटेन स्थित आई.बी.सी. संस्था द्वारा २०१५ के विश्व के टॉप १०० प्रोफेशनल सम्मान से नवाजा गया।

आर्य अभिनन्दन

आर्य समाज के उपदेशक एवं भजनोपदेशक जिनकी आयु साठ वर्ष अथवा उससे ज्यादा हो गई है उन सबका इस वर्ष अभिनन्दन किया जायेगा। इस अवसर पर एक पुस्तिका भी प्रकाशित की जावेगी। कृपया ऐसे सभी उपदेशक एवं भजनोपदेशक अपने फोटो कार्यक्षेत्र व अन्य विवरण निम्न पते पर अतिशीघ्र भेजने का श्रम करें-

ठाकुर विक्रम सिंह
A-41,II nd तल, लाजपत नगर-II
निकट लाजपत नगर, मेट्रो स्टेशन, नई दिल्ली- ११००२४

ऋषि बोध चिन्तन

'मूल'- सर्जना की शाश्वत परम्परा के संवाहक अमृता-कर्षण दम्पती

-देव नारायण भारद्वाज

महाभारतकालीन यक्ष-युधिष्ठर प्रश्नोत्तर प्रकरण से विषय-प्रवेश करते हैं। प्रश्न- पृथ्वी से भारी क्या है? उत्तर- माता। प्रश्न- आकाश से भी ऊँचा क्या है? उत्तर- पिता। प्रश्न- युवा दम्पति के लिए श्रेष्ठ क्या है? उत्तर- सुसंस्कारित-सुपुत्र। वह क्या है- जो पृथ्वी को पलड़े के ऊपर रखते हुए अपने पलड़े को नीचे कर दे? वह है पृथ्वी की सजलता-आर्द्रता। आकाश को नीचे छोड़कर जो ऊपर दिखाई दे-वह कौन है? वह है सूर्य। पृथ्वी की सजलता सागर से प्रदर्शित होती है। सूर्य तपस्या करता है। अपनी सप्रविध किरणों को बिखेरता है। सागर की लहरें किरणों से मिलन हेतु व्याकुल हो उठती हैं। दोनों के स्पर्श से पर्जन्य-मेघ का निर्माण होता है, जिससे वृष्टि से पृथ्वी के गर्भ में सूर्य का अंश अंकुरण करके 'मूल' आदि आधार का सृजन होता है। सर्वांश में देखा जाय तो संसार में माता-पिता तो असंख्य होते हैं; किन्तु उनमें से कितने हैं जो सूर्य जैसी तपस्या कर सकते हैं, और सागर जैसी धीर-गम्भीर सजलता-दयालुता रखते हैं! जो दम्पति तेजस्विता एवं दयालुता को अपने जीवन का अंग बना लेते हैं, वही जन्म देते हैं श्रेष्ठ सुसंस्कारित सन्तान को।

एक होती है मस्तिष्क की भाषा, और दूसरी होती है हृदय की भाषा। प्रायः लोग इन्हीं दो भाषाओं में बोलते हुए दिखाई देते हैं। हिमालय की भाँति मस्तिष्क शरीर के शीर्ष पर होता है, जबकि हृदय-गंगा-यमुना की भाँति अपेक्षाकृत नीचे होता है। इन दोनों के मध्यान्तर-अर्थात् मस्तिष्क एवं हृदय के मध्य में होता है- मनुष्य का मुख, जिसमें सक्रिय रहती है मनुष्य की रसना; जब वह हृदय एवं मस्तिष्क दोनों को सन्तुलित कर बोलती है, तब इसे हम कहते हैं सरस्वती। पिछले एक सप्ताह से कई शब्दकोशों को देखकर मैंने एक शब्द 'दशरथ' का अर्थ जानने का प्रयत्न किया, तो सभी में लिखा हुआ मिला- 'भगवान राम के पिता'। यह हुई हृदय की भाषा। मस्तिष्क ने सोचा- क्या राम के जन्म के बाद ही पिता का नामकरण हुआ- 'दशरथ'; जब तक राम का जन्म नहीं हुआ था, तब तक क्या वे दशरथ नहीं थे? थे, तब दशरथ, शब्द का कोई अर्थ तो होगा ही। जब हमने वेद भगवान से पूछा, तो **'दशरथान्निष्टिभतः'** (ऋ. ६.४७.२४) दश विशिष्ट रथों से पालन-रक्षण करने वाले राजादि जन का भावार्थ पता चला।

आगे चिन्तन करने पर पता चला अपनी दसों इन्द्रियों पर संयमपूर्वक शासन करने वाला, सूर्य की भाँति जिसका रथ दशों दिशाओं में निर्बाध गति करके यशस्वी बनता है। इस प्रकार दशरथ एक ऐसी देव-संस्कृति का उन्नायक है, जो उपभोक्तावाद में नहीं, प्रत्युत् त्यागवाद में विश्वास करता है; और एक नहीं दस-दस मुखों से सृष्टि के उपभोग में संलग्न-दशानन के संहार के लिए अपनी सुसन्तान को समर्पित करने को विवश होता है और आसुरी कुसंस्कृति पर देव संस्कृति की विजय सुनिश्चित हो जाती है। यह बात रही त्रेतायुग की। युग परिवर्तन हुआ। द्वापर आ गया। आते हैं- 'वसुदेव' इनका शब्दार्थ भी तो 'सूर्य' ही है। इन्हें भी कंस की राक्षसी कुसंस्कृति से मानव-त्राण-संसार के कल्याण के लिए अपनी सन्तानों को भेंट करना पड़ गया। देवासुर संग्राम तो हर युग में खड़ा हो जाता है। एक बार फिर युग परिवर्तन हुआ। आ गया कलियुग। इस बार फिर सूर्य को अपने प्राणों की बाजी लगानी पड़ी। सूर्य की आन्तरिक आकर्षण शक्ति के रूप में प्रकट हुए 'कर्षणजी'। यह भी कब चाहते थे कि गहनतम आसुरी अन्धकार पूर्ण शक्तियों से लोहा लेने के लिए इनका सुपुत्र युद्ध में कूद पड़े, किन्तु परमेश प्रभु की यही व्यवस्था थी।

दशरथ-दसों दिशाओं में प्रकाश-ऊर्जा प्रदान कर संसार को बसाने से वसुदेव बन जाते हैं। यही वसुदेव अपने पुत्र को देकर एक 'नन्द' ही क्या संसार में आनन्द कर देते हैं। दशरथ-वसुदेव-नन्द की भव्य भावनाएँ सार-समन्वित होकर आ जाती हैं- कर्षणजी में। आइए मातृपक्ष पर भी थोड़ा ध्यान दिया जाये। सागर की सजल करुणामयी भव्य भावनाएँ जिसकी कार्य कुशलता के रूप में प्रकट हों-वहीं तो कौशल्या है और पुण्य-प्रसविनी बनकर देवत्वपूर्ण सन्तान को कारागार की पीड़ाओं में भी जन्म देती हैं देवकी। रात्रि के अन्धकार में जन्मी सन्तान सूर्योदय होते-होते माँ यशोदा के अंक में पहुँच जाती है।

प्रतिवर्ष जब कृष्ण जन्माष्टमी आती है तो चाहे कृष्ण जन्मभूमि हो या द्वारिका सर्वत्र मंदिरों में एक गीत अवश्य लय-ताल के साथ गाया जाता है- 'जसोदा जायो ललना मैं वेदन में सुनि

आई'। फिर यहाँ पर मस्तिष्क-हृदय में द्वन्द्व हो गया। वेदों के प्रकट होने के पौने दो अरब वर्ष बाद जन्म लेने वाले कृष्ण का वेदों में वर्णन कैसे संभव है। अपठित गोपिकाओं को **'माता भूमिः पुत्रोऽहम् पृथिव्या'** अर्थात् भूमि मेरी माता है मैं पृथ्वी का पुत्र हूँ। वह वेद-वाक्य भले ही ज्ञात न हो; किन्तु युगानुकूल वे वैसी ही सन्तान की कामना करती हैं जैसी वेदों में व्यक्त की गयी है। इसीलिए वे गाते हुए नहीं थकती हैं- 'जसोदा जायो ललना मैं वेदों में सुनि आई।'

जन्मदा देवकी एवं प्राणदा यशोदा का ही प्रतिरूप है अमृता वेन। जिसकी कीर्ति अमिट है वही तो अमर है। सो अमृता का ही तो दूसरा नाम यशोदा है। दशरथ-कौशल्या को सन्तान के लिए तरसना पड़ा। श्वेत केश होने पर पुत्रेष्टि यज्ञ करके 'सन्तानों' का मुख देखा। वसुदेव-देवकी की दशा अधिक पीड़ाजनक है। कारागृह के भय-बन्धनों के मध्य सन्तानें जन्म तो लेती हैं, किन्तु जन्मते ही दुष्ट कंस के द्वारा चट्टान पर पटक-पटक कर मार दी जाती हैं। कर्षणजी-अमृता दम्पति की स्थिति इन्हीं दम्पतियों की भाँति ही सन्तापकारी है। विवाह के चौदह वर्ष तक गोद सूनी रहने का आन्तरिक क्लेश झेलने के बाद उनके ज्येष्ठ पुत्र 'मूलशंकर' को भी युवा होते-होते गृह त्याग करके आसुरी शक्तियों के विनाश हेतु प्रयाण-करना पड़ता है। वनवास की निश्चित चौदह वर्ष की अवधि व्यतीत कर, रावण राक्षस के संहार के बाद राम अयोध्या लौट आते हैं और अपना सिंहासन शोभित करते हैं। कृष्ण गोकुल से निकलकर असुरों का विनाश करते हैं और द्वारिकाधीश का राज-काज सँभाल लेते हैं। फिर भी इनके माता-पिता को अपने पुत्रों के बिछोह की असह्य पीड़ा का सामना करना पड़ता है। पिता दशरथ का तो निधन ही हो जाता है। कौशल्या जी की दशा अति दयनीय हो जाती है-

मलिन बसन बिवरन बिकल, कृस शरीर दुःख भार।
कनक कलप बर बेलि वन, मानहुँ हनी तुसार।।

युवा मूलशंकर घर में होती अपने विवाह की मंगलमयी मनोहारी व्यवस्थाओं के मध्य से अपनी माँ अमृता के चिर संचित अरमानों पर कठोराघात करके एक बार जब अपने

जन्म ग्राम टंकारा से अभिनिष्क्रमण करते हैं, तो दुबारा कभी उधर मुड़कर नहीं देखते हैं। सिपाहियों के साथ सिद्धपुर के मेले में विरक्त वेशधारी 'शुद्ध चैतन्य' के रूप में पकड़ लिए जाने पर पिता के क्रोध का सामना करते हैं। पिता के वे हृदय-विदारक शब्द 'तेरी माता तेरे लिए रात दिन रोकर मरी जा रही है और तू वैरागी बना है, तू मातृहन्ता है', सुनकर भी मूलशंकर अपनी माँ पर दया नहीं करते हैं। सिपाहियों के साथ वे घर की ओर वापस चलते हैं किन्तु रात्रि में सुअवसर पाकर वे ऐसे भागते हैं कि फिर कभी पिता की पकड़ में नहीं आते हैं। राम-कृष्ण की भाँति ही वे 'मूलशंकर-दयाल-शुद्ध चैतन्य' क्रमोत्तर नाम धारणकर संसार के प्रखर परिष्कार हेतु एक योद्धा तुल्य कृतसंकल्पित हो जाते हैं। इसके लिए पिता 'कर्षणजी' को सूर्य सदृश तपना और माता 'अमृतावेन' की आँखों से अश्रुमयी गंगा-यमुना की धाराओं के समान बहना पड़ता है। युग-युग का यही इतिवृत्त है कि जगदोद्धारक-मानवोद्धारक-वेदोद्धारक 'मूल' के सृजन के लिए पितृ-मातृ शक्तियों को सूर्य की तेजस्विता व समुद्र की तीक्ष्ण तरलता को धारण करने की शाश्वत परम्परा का निर्वहन करना पड़ता है, तभी तो गंगा-यमुना की धाराओं वाली उनकी आँखों का तारा आत्मज दयानन्द सरस्वती विश्व-व्योम पर वेदालोक कर अमर हो जाता है। भक्त कवि सूरदास जी ने कभी कृष्ण-वियोग में जो पद लिखा था, वह 'कर्षण-अमृता' दम्पति के प्रसंग में कहीं अधिक सटीक लगता है:-

निशि दिन बरसत नैन हमारे।
सदा रहति पावस रितु हम पर जब तैं स्याम सिधारे।
आँसू सलिल सबै भइ काया, पल न जात रिस टारे।
निशि दिन बरसत नैन हमारे।।

'वरेण्यम्' अवन्तिका (प्रथम), रामघाट मार्ग, अलीगढ़

सत्यार्थ सौरभ के वर्तमान ग्राहकों के लिए रियायती योजना

आपकी सदस्यता को यदि आप पंचवर्षीय सदस्यता में परिवर्तित करते हैं तो चार सौ की बजाय केवल तीन सौ रु. भेज दें तो आपको पंचवर्षीय सदस्य में नामित कर लिया जायेगा। इसी प्रकार अगर आप आजीवन सदस्य बनना चाहते हैं तो बजाय एक हजार रु. के मात्र नौ सौ रु. प्रेषित करने का श्रम करें तो आपको आजीवन सदस्यता सूची में सम्मिलित कर लिया जायेगा।

वानप्रस्थाश्रम के कर्त्तव्य

वानप्रस्थ आश्रम की वैदिकता

इस विषय में कतिपय विद्धानों की मान्यता है कि- वैदिक संहिताओं तथा ब्राह्मण ग्रन्थों में 'आश्रम व्यवस्था' का उल्लेख नहीं है।

सत्यार्थ प्रकाश के प्रणेता महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज ने स्वयं इस शंका को प्रस्तुत करके अन्यत्र इसका समाधान किया है। ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका के 'ब्रह्म विद्या विषय' के प्रारम्भ में उन्होंने लिखा है- 'वेदेषु सर्वा विद्याः सन्त्याहोस्विन्नेति?' वेदों में सब विद्याएँ हैं, किन्तु 'मूलोद्देशतः'- मूल रूप में। उसी वेद रूपी बीज को लक्ष्य में रखकर आगे ऋषि-मुनियों ने भिन्न-भिन्न विद्याओं का विस्तार करने के लिए ब्राह्मण, उपनिषद्, उपवेद, वेदांग, उपांग, गृह्य सूत्र, श्रौत सूत्र आदि अनेक ग्रन्थों का निर्माण किया। उन्हीं मूल मंत्रों का आशय लेकर ऋषियों ने स्मृतियों, श्रौत्र सूत्रों और गृह्य सूत्रों में विधियों का विधान किया है।

अथर्ववेद मंत्र ९/५/१ में अज्ञान मोह आदि के महान् अन्धकारों को पार करके 'तृतीयनाक' में आरोहण का उल्लेख है। महर्षि दयानन्द ने इसका अर्थ करते हुए लिखा है- 'बहुत प्रकार के बड़े-बड़े अज्ञान, दुख आदि संसार के मोहों को तरके अर्थात् पृथक् होकर अपने आत्मा को अजर-अमर जान, तीसरे दुःखरहित वानप्रस्थाश्रम को आक्रमण अर्थात् रीतिपूर्वक आरुढ़ हो। (संस्कार विधि-वानप्रस्थ प्रकरण) वस्तुतः वेद में वानप्रस्थ का पर्याप्त उल्लेख मिलता है। हाँ, शब्दों का अर्थ "पर्याय" रूप में या 'उपमा' रूप में हो सकता है। उदाहरणार्थ-

वातस्याश्वो वायोः सखाथो देवेषितो मुनिः।
उभौ समुद्रावा क्षेति यश्च पूर्व उतापरः॥
मुनयो वातरशनाः पिशङ्गा वसते मला।
वातस्यानु ध्राजिं यन्ति यद्देवासो अविक्षत॥

ऋ. १०/१३६/५,२

प्रथम मंत्र में 'पूर्व' तथा 'अपर' पदों में क्रमशः वानप्रस्थाश्रम तथा संन्यासाश्रम अभिप्रेत है। वेद में "मुनि" शब्द वानप्रस्थ का वाचक है। यह वानप्रस्थ का वर्णन करने वाले मनुस्मृति के छठे अध्याय में प्रयुक्त 'मुनि' शब्द से सिद्ध है-

'मुन्यन्नैर्विविधैर्मेध्यैः' (६-५) 'मुन्यन्नैः स्वयमाह्यतैः (६-१२)
'मुन्यन्नं पूर्वसंचितम्' (६-१५) 'मुनिर्मूलफलाशनः' (६-२५)

निश्चय ही वेद में 'मुनि' शब्द से वनी का बोध होता है। महर्षि निष्कर्ष रूप में लिखते हैं- 'चार वर्ण, चार आश्रम, भूत, भविष्यत् और वर्त्तमान आदि की सब विद्या वेदों से ही प्रसिद्ध होती है। (ऋग्वेदादिभाष्यभूमिकाः वेदविषय)

वानप्रस्थ का प्रयोजन

वानप्रस्थ में दीक्षित होने का प्रयोजन आध्यात्मिक, सामाजिक, शारीरिक तथा वैचारिक स्थिति को परिपुष्ट करना है। ईश्वर की उपासना, शारीरिक उन्नति के लिए योगाभ्यास स्पष्टतः वानप्रस्थ का स्वस्थ्य प्रयोजन है। पारलौकिक उन्नति के लिए मोह त्याग, भोगों के प्रति अनासक्ति, इन्द्रियसंयम, सादा जीवन बिताना आदि नैतिक प्रयोजन हैं। वनस्थ होकर मुनिवृत्ति धारण कर राग, द्वेष, काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकारादि का परित्याग कर अग्निहोत्र, जप, तप आदि के प्रति निष्ठा तथा वेद का स्वाध्याय करना वानप्रस्थ के प्रयोजन कहे जा सकते हैं।

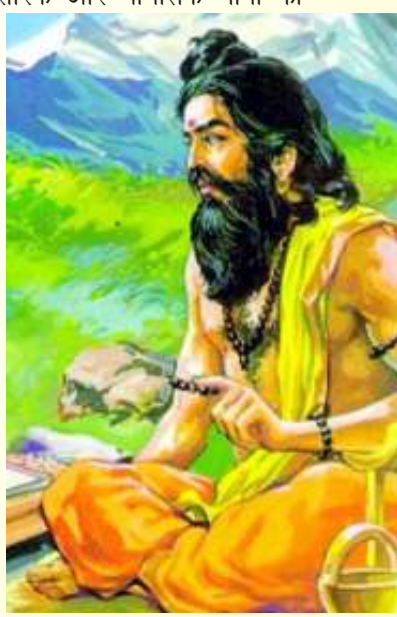

गृहस्थ में रहते हुए शारीरिक और मानसिक भोगों को भोगा तथा इनकी अनित्यता का अनुभव करके अब नित्य आत्मिक सुखों की प्राप्ति के लिए इन्द्रियों और मन को वश में जीतकर स्वाध्याय में नित्य संलग्न रहता है। ईर्ष्या-द्वेष को मन से निकालकर सभी के प्रति मित्रता, दया के भाव रखता है, सबके जीवन के कल्याण के लिए जो ज्ञान और अनुभव उसके पास हैं उससे वह सभी को लाभान्वित करता है। अपनी आध्यात्मिक उन्नति के लिए सदा सावधान रहता है, दूसरों से कुछ लेता नहीं है अपितु दूसरों को देता ही देता है।

वानप्रस्थ, नागरिक या ग्रामीण जीवन तथा पारिवारिक सदस्यता त्याग कर वन में रहकर तपस्या में दीक्षित होना है। वनस्थ व्यक्ति गृहस्थ में आसक्त व्यक्तित्व एवं इन्द्रियों

की बहिर्मुखी मनः प्रवृति को अन्तर्मुखी बनाने की साधना करे तथा धर्मपूर्वक सदैव वैराग्य का अभ्यास करे।
(संस्कारविधि शोध ग्रंथ- डॉ. रविदत्त शास्त्री पृ. १८८)

वानप्रस्थाश्रम जीवन को उन्नत बनाने का आश्रम है। यह खोई हुई सम्पत्ति को अर्जित करने का आश्रम है, उच्च भावनाओं के जागरण का आश्रम है, जीवन-लक्ष्य की ओर बढ़ने का आश्रम है, शिक्षा प्रसार का आश्रम है, त्याग एवं तपस्या का आश्रम है और पवित्र साधना का आश्रम है। वानप्रस्थ से तात्पर्य वन में रहना मात्र नहीं है, वानप्रस्थ तो भावनात्मक परिवर्तन का आश्रम है। भावनात्मक परिवर्तन संयम से या वृत्तियों के उन्नयन से होता है। अति संयम कुण्ठाओं को जन्म देता है। किन्तु वृत्तियों का उन्नयन, विचारों का उदात्रीकरण भावनात्मक परिवर्तन लाता है। अब तक वृत्तियाँ घर-परिवार तक सीमित थीं, अब उन वृत्तियों को अभ्यास द्वारा अपने अड़ोस-पड़ोस ही नहीं, मुहल्ले, ग्राम के लोगों में अपनत्व की भावना का विकास करना है। अब तक परिवार के कल्याण की चिन्ता थी, अब परिवार के ऊपर उठकर अन्यों के कल्याण में अपने जीवन को लगाना है। सर्वहिताय जीवन यापन कर **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** को साकार बनाने की भावनाओं के उन्नयन के लिए वानप्रस्थाश्रम है। 'वानप्रस्थाश्रम जीवन के बीज को सुगन्धित एवं ज्ञान से पूर्ण करने का आश्रम है। आज हमारा देश अनेक समस्याओं से ग्रस्त है। हमारे पूर्वजों ने आश्रम व्यवस्था इन समस्याओं के समाधान के लिए ही रखी थी। वानप्रस्थाश्रम समाज की समस्याओं के समाधान का आश्रम है।'

संपादक- अशोक आर्य
नवलखा महल, गुलाबबाग

फार्म.IV

समाचार पत्र के स्वामित्व और अन्य विशिष्टियों के बारे में विवरण जो प्रत्येक वर्ष फरवरी के अंतिम दिन के पश्चात् प्रथम अंक में प्रकाशित किया जायेगा।

१. प्रकाशक का स्थानः– नवलखा महल, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर (राज.) ३१३००१
२. प्रकाशन की नियत अवधिः– मासिक
३. मुद्रक का नामः– अशोक कुमार आर्य राष्ट्रीयताः– भारतीय
पताः– नवलखा महल, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर (राज.) ३१३००१
४. प्रकाशक का नामः– अशोक कुमार आर्य राष्ट्रीयताः– भारतीय
पताः– नवलखा महल, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर (राज.) ३१३००१
५. सम्पादक का नामः– अशोक कुमार आर्य राष्ट्रीयताः– भारतीय
पताः– नवलखा महल, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर (राज.) ३१३००१
६. उन व्यक्तियों के, जो समाचार पत्र के स्वामी हैं और उन भागीदारों या शेयरधारकों के, जो कुल पूँजी के 1 प्रतिशत से अधिक अंश के धारक हैं, नाम और पते।
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल
गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर (राज.) ३१३००१

मैं अशोक कुमार आर्य घोषणा करता हूँ कि ऊपर दी गई विशिष्टियाँ मेरे सर्वोत्तम ज्ञान और विश्वास के अनुसार सत्य हैं।

तारीखः– ०७.०३.२०१५
प्रकाशक के हस्ताक्षर

सत्यार्थ प्रकाश क्यों पढ़ें ?

इसलिए कि यह महान् ग्रन्थ-

१. समता (Equality) का पाठ पढ़ाता है।
२. विश्वव्यापी भ्रातृ-भाव (Universal Brotherhood) के भाव सिखाता है।
३. सर्वांगपूर्ण विकास (Harmonious Development) का मार्ग दिखाता है।
४. वैज्ञानिक आधार (Scientific Base) ईश्वर, जीव और प्रकृति का बोध कराता है।

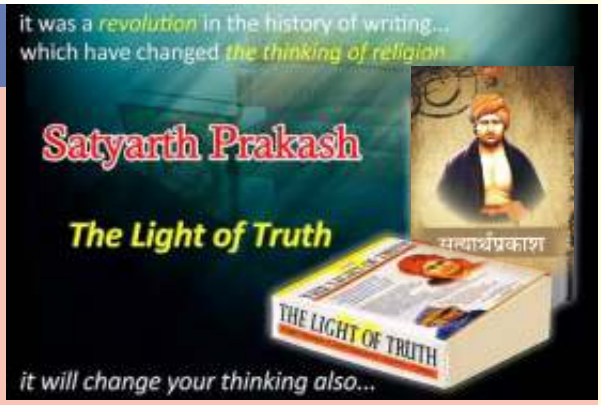

उपरोक्त (लिखित) चार सूत्र वैदिक सत्य सनातन धर्म के आधार हैं। विश्वव्यापी सत्य धर्म केवल वेद विद्या में ही है। साम्प्रदायिक ग्रन्थों में ऐसा वैज्ञानिक व तर्क प्रतिष्ठित धर्म नहीं है। अतः यह मत-मतान्तरों के पाखण्डों से बचाता है। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रणीत अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' में इन्हीं चार सूत्रों की विशद् व्याख्या की गई है। मानवीय धर्म एवं विश्व भ्रातृभाव प्रचार व प्रसार हेतु आयें घर-घर में 'सत्यार्थ प्रकाश' पहुँचाने का प्रयास करें। यह मानव एकता का पुण्य कार्य है।

शुभेच्छु
(स्वामी) ब्रह्मानन्द सरस्वती (वेदभिक्षु)
महर्षि दयानन्द मार्ग, आर्य समाज-बिहारीपुर, बरेली- २४३००३ (उ.प्र.)
चलभाष : ०९७५३५-२७४८५, ०९४१२३-७२१९७
सभी वैदिक साहित्य हेतु सम्पर्क सूत्र - ०९८९७८८०९३०

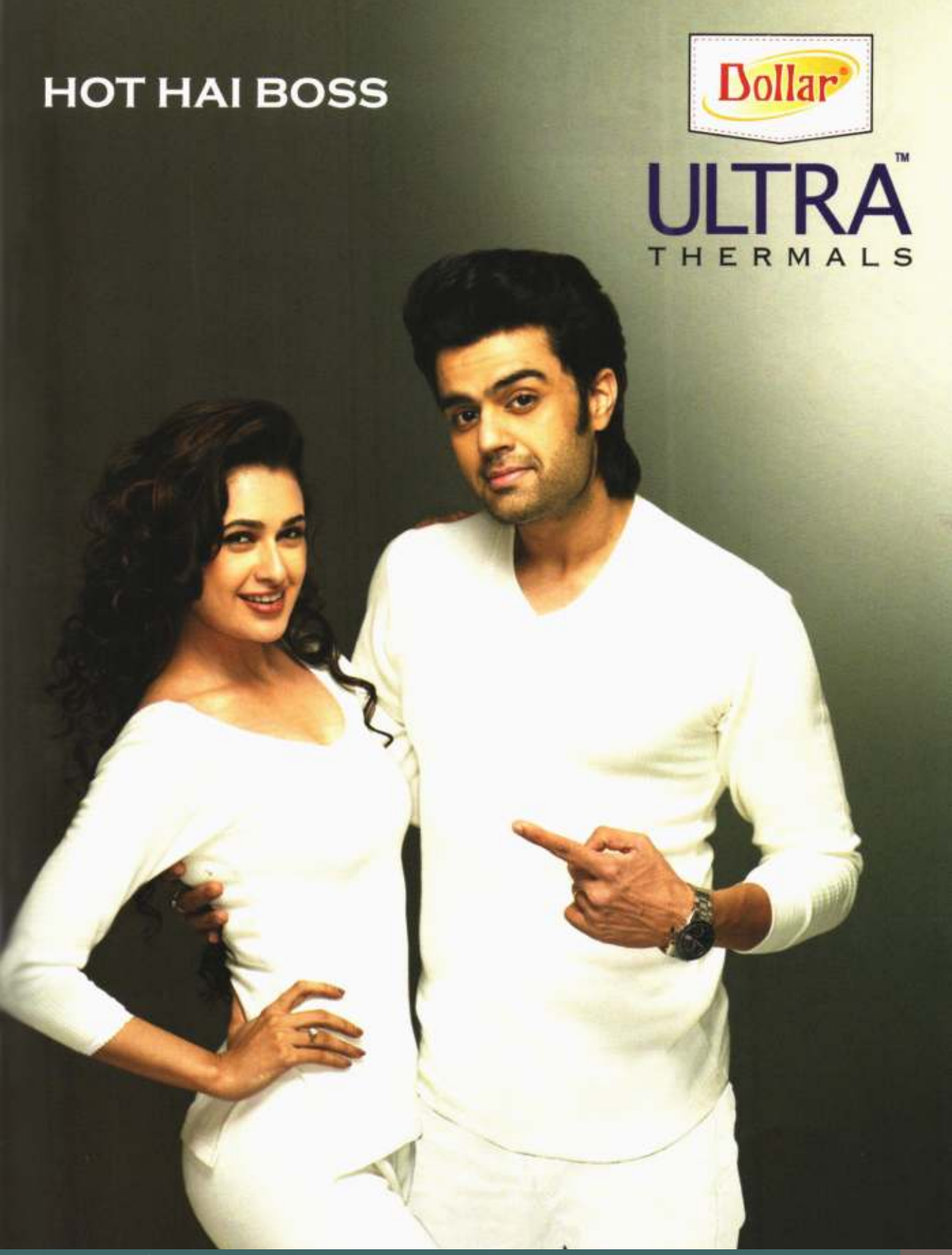
HOT HAI BOSS
Dollar
ULTRA™
THERMALS

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 March-2015 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2013-2015

महर्षि दयानन्द सरस्वती

एक-एक ब्रह्माण्ड में एक सूर्य्य प्रकाशक और दूसरे सब लोक-लोकान्तर प्रकाश्य हैं।

– सत्यार्थप्रकाश- पृ. २२९

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य